॥ अथ ॥

## ॥ वस्त्रदानोपरि श्री उत्तमचरित्र कुमाररासः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ चरम जिणेसर चित्त धरुं, करूं सदा गुणग्राम ॥ भावठ भाजे भवतणी, लीजंते जस नाम ॥ १ ॥ मन वच काया शुद्ध करी, जो कीजें जिन जाप ॥ उज्ज्वल थाये आतमा, जाये दुःख संताप ॥ २ ॥ जेहने नामें संपजे, वंछित सुख सुविशाल ॥ कष्ट निवारे करि कृपा, सेवक जन प्रतिपाल ॥ ३ ॥ समरुं सरस्वती सामिनी, सुमती तणी दातार ॥ वीणा पुस्तक धारिणी, कवियण जण आधार ॥ ४ ॥ हंसासण हुं सागमणी, त्रिभूवन रूप अनूप ॥ मोह्या इंद नरिंद सहु, न लहे कोइ सरूप ॥ ५ ॥ जो माता सु प्रसन्न हुवे, आपे अनुपम ज्ञान ॥ ज्ञानथकी दर्शन हुवे, दर्शनमोक्ष विमान ॥ ६ ॥ जिन मुख पंकज वासिनी, समरी शारद माय ॥ कहुं कथा उत्तम चरित्र, सांभलजो चित्त लाय ॥ ७ ॥ नृपसुतें दीधुं भाव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शुं, वस्त्रदान मुनिराय ॥ सुख पाम्या दाम्या अरि, दान तणे सुपसाय ॥ ८ ॥ सरस कथा संबंध छे, सु णजो सहु नर नार ॥ आलस नंघ प्रमाद तजी, ध रजो चित्त मऊार ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ इणहीज जंबुद्वीप मऊार, दक्षिण भरतक्षेत्र सुविचार ॥ नयरी अनुपम वाणारसी, त्रिभुवनमां नही अलका इसी ॥१॥ विशमो गढने विशमी पोल, ऊलके रविकोशीसा नल ॥ नंचा घर मंदिर कैलास, सप्तभूमिया जिहां आवास ॥२॥ जिन मंदिर शिव मं दिर जिहां, साधु साधवी विचरे तिहां ॥ वारु चा रे वर्ण त्यां वसे, धर्मकरण सहु को उल्लसे ॥ ३ ॥ लो क सुखी तिहां धनद समान, घर घर दीजें वंछित दा न ॥ दीन दुःखीनी करे संभाल, जीव सहुना जे प्रति पाल ॥ ४ ॥ न करे कोइ केहनी कांई तांत, जेहथी थाये कलि उत्पात ॥ न करे परनिंदा परद्रोह, एह वा लोक वसे कृत सोह ॥ ५ ॥ तिण नगरी मकरध्व ज भूप, अभिनव मकरध्वज अनुरूप ॥ न्यायवंत गु णवंत कृपाल, अरियणने लागे जेम काल ॥ ६ ॥ पं चमो लोकपाल भूपाल, देखी हरखे बालगोपाल ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हय गय रथ पायक ज्नंडार, विज्नव तणो लाज्ने नही पार ॥ ७ ॥ राणी जेहने लक्ष्मीवती, बुद्धिमंत जाणे सरस्वती ॥ रूपें जीती जेणें अपछरा, नमणी खमणी जाणे धरा ॥ ८ ॥ चनसठ नारी कलानिधि जाण, हंस हराव्यो गति पिक वाण ॥ जेहनुं वपु देखी नल्लस्या, नत्तम गुण आवी मनें वस्या ॥ए॥ ज्नोगवतां सुख लीलविलास, शुन्न मुहूरत सुत आयो तास ॥ नत्तम गुण देखी अन्निराम, नत्तमचरित्र दियुं तस नाम ॥ १० ॥ बीज चंड्नी परें कुमार, दिन दिन वाधे कलाविस्तार ॥ दीठे सहुनें आवे दाय, पूरव पुण्य तणे सूपसाय ॥ ११ ॥ बालपणे पण दया विशाल, न करे केहने हरबर मार ॥ सत्यवादी मुख अमृतवाण, न्यायवंत बहु गुणनी खाण ॥ १२ ॥ शस्त्र शास्त्रनी शीखी कला, धर्मशास्त्र शीख्यां निर्मलां ॥ न लीये जेह अदत्तादान, परस्त्री जाणे बेहेन समान ॥ १३ ॥ ज्नगति करे जिनवरनी घणी, गुरुनी ज्नगति करे सुख ज्नणी ॥ एहवो कुमर गुणें सुकमाल, कहे जिनहर्ष प्रथम थइ ढाल ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कला बहोंतेर जे ज्नणया, पंडितनाम धराय ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धर्मकला आवी नहिं, तो मूरखना राय ॥ १ ॥ अवर सर्व विकला कला, धर्मकला शिरदार ॥ धर्मकला विण मानवी, पशुतणे अवतार ॥ २ ॥ रात दिवस धर्मे रमे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ सुखदायी सहु लोकमें, यश विस्तर्यो अपार ॥ ३ ॥ एक दिन मनमां चिंतवे, हुं हवे थयो जुवान ॥ बाप तणुं धन जोगवुं, एम तो न लहुं मान ॥ ४ ॥ बापतणुं धन बालपण, खातां खोट न कांइ ॥ तरुणपणें जो जोगवे, तो पुरुषातन जाय ॥ ५ ॥ सोल वरस वोल्यां पछे, न करे जो असास ॥ बाप तणी आशा करे, धिक जन मारो तास ॥ ६ ॥ सिंह सिंचाणो शा पुरुष, न करे परनी आश ॥ निज जुज खाट्युं खाइयें, तो लहियें जश वास ॥ ७ ॥ जण न कहायो जगतमां, बालपणें यशवास ॥ पशु हूआ ते बापडा, पडिया खावे घास ॥ ८ ॥ करुं परीक्षा कर्मनी, जोउं देश विदेश ॥ ख ग लेइ निशि चालियो, धरतो हरख विशेष ॥ ए ॥

॥ ढाल बीजी ॥ मारुं मन मोह्युं रे वप्रानंदशुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ कर्म परिक्षा रे करण कुमर चढ्यो रे, धरतो मनमां उत्साह ॥ साथें लीधो रे जाग्यसखायीयो रे,

धीरजवंत गजगाह ॥ १ ॥ क० ॥ रणवनवासी गा
म नगर फरे रे, जोतो ख्याल अपार ॥ भमतो भ
मतो चित्रकूट आवियो रे, एकलडो शिरदार ॥ २ ॥
क० ॥ महिसेन राजारे तेणे पुर राजियो रे, देश जे
हनो मेदपाट ॥ जेहने पोतरें बाणुं लख मालवो रे,
मरु मंडल करणाट ॥३॥क०॥ देश घणाना रे नरपति
भलेंगे रे, पुहवी प्रबल प्रताप ॥ निशदिन लीणोरे रहे
जिन धर्मशुं रे, जाणे राज्य संताप ॥ ४॥ क० ॥ पुत्र
नहीं रे राजधुरा धरें रे, केहने आपुं राज ॥ योग्य
नही रे कोइ राज्य पालवा रे, छोडंतां पण लाज ॥
॥ ५ ॥ क० ॥ उत्तम कोइ रे जो पुण्यवंत मिले रे,
तो तेहने देउं भार ॥ नियत करुं रे आतम साधना
रे, लेउं लेउं संजम भार ॥ ६ ॥ क० ॥ एक दिन रा
जारे रमवा निसर्यो रे, साथें बहु परिवार ॥ नव वय
वारु रे लक्षण सुंदरू रे, अश्व घोडे असवार ॥ ७ ॥
क० ॥ नवल वछेरो रे चंचल गति नहीं रे, पूछे मं
त्रीने भूप ॥ कहो केम मंदगति ए अश्वनी रे, कोइ
न जाणे स्वरूप ॥ ८ ॥ क० ॥ वली वली पूछे रे
कोइ बोले नही रे, कोइ न भाखे विचार ॥ राय स
मीपें रे अश्व निहालीने रे, आव्यो उत्तम कुमार ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ए ॥ क० ॥ कुमर पयंपे रे सुणो माहारायजी रे, एणे पियुं महिषीनुं दूध ॥ मंदगति थइ रे तेणे ए कि शोरनी रे, नहीं गति चंचल शुद्ध ॥ १० ॥ क० ॥ पय महिषीनुं रे थाये वायडुं रे, वायें गति ज्ञारे होय ॥ तुं केम जाणे रे वत्स राजा कहे रे, ज्ञानी चतुर बे को य ॥ ११ ॥ क० ॥ अश्वपरीक्षा रे जाणुं रायजी रे, उत्तमचरित्र कहे ताम ॥ राय कहे रे साचुं तें कह्युं रे, लघुवय विद्याधाम ॥ १२ ॥ क० ॥ बालपणाथी रे एहनी मा मुइ रे, बालक कांइ न खाय ॥ महिषी दूधें रे एह उब्बेरियो रे, तें ज्ञाख्युं ते न्याय ॥ १३ ॥ क० ॥ गुण देखीने रे उत्तमकुमारना रे, हर्षित थयो रे ज्ञूपाल ॥ बीजी पूरी रे थइ बे एटले रे, कहे जिन हर्ष ए ढाल ॥ १४ ॥ क० ॥ सर्वगाथा ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरतणा गुण देखीने, रीझ्यो चित्त नरेश ॥ राजकुमर बे ए सही, निकलियो परदेश ॥ १ ॥ जोतां ए जुगतो मिल्यो, राजकाज समरब ॥ एहने राज्य देइ करी, साधुं हुं परमब ॥ २ ॥ सांज्ञल हो तुं शा पुरुष, लहयें माहारुं राज ॥ हुं दीक्षा लेइश हवे, सारिश आतम काज ॥ ३ ॥ ज्ञाग्य संजोगे मुज ज्ञणी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुं मलियो गुणवंत ॥ ए लखियो छे ताहरे, वखतें राज्य महंत ॥४॥ जेहने जेहवुं जोग्यता, तेहने तेहवुं होय ॥ काने कुंडल रयणमय, नयणें काजल जोय॥५

॥ ढाल त्रीजी ॥ नेम लालन मोरे मन वस्यो ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे सुण तातजी, तुम्हे कह्युं ते प्रमाणो रे ॥ पण मुज आगल जायवुं, करवा काम कल्याणो रे ॥ १ ॥ कु० ॥ काम करीनें आवशुं, वलतुं कह्युं क रेशुं रे ॥ जे देश्यो सुप्रसन्न थइ, ते ततक्षण हुं लेश्युं रे ॥ २ ॥ कु० ॥ एम कही राय चरण नमी, कीधुं कुमर प्रयाणो रे ॥ पुहवी अचरिज जोवतो, जोतो विविध विनाणो रे ॥ ३ ॥ कु० ॥ भमतो भमतो अ नुक्रमें, भरुयच्छ नयरें आयो रे ॥ पुरनी शोभा जोव तो, हैडे हर्षित थायो रे ॥ ४ ॥ कु० ॥ श्रीमुनिसुव्रत देहरे, जइ प्रणम्या जिनराजो रे ॥ भाव भक्ति स्तव ना करे, धन्य दिवस मुज आजो रे ॥५॥कु०॥ मूरति प्रभु मनमोहिनी, आर्त्ति जगत समावे रे ॥ जनमन आनंदकारिणी, दीठा स्वामी सुहावे रे ॥ ६ ॥कु०॥ वंछित दान कल्पलता, भवदुःख सायर नावो रे ॥मू रति अमृतस्पंदिनी, जागे समकित भावो रे ॥ ७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ कु० ॥ तुं जगबंधव जगधणी, तुं जग दीन दया लो रे ॥ तुं जगतारक जगपति, करुणावंत कृपालो रे ॥ ८ ॥ कु० ॥ श्री जिनराज जुहारीने, आयो सा यर तीरो रे ॥ एणे अवसर व्यवहारियो, कुबेरदत्त स धीरो रे ॥ ए ॥ कु० ॥ नूरि वाहण तेणें पूरियां, म गधद्वीप नणी आयो रे ॥ अष्टादश जोजन सयां, लेइ सुन्नट सखायो रे ॥ १० ॥ कु० ॥ कुमर नमरप ण कौतुकी, कुबेरदत्त संघातो रे ॥ वाहण बेठो जो यवा, वारिधि ख्याल विख्यातो रे ॥११॥कु० ॥ वाह ण चाड्यां शुन्न दिनें, शकुन लेइ श्रीकारो रे ॥ केट लेक दिवसें गये, खूट्यो वारि विचारो रे ॥ १२ ॥ ॥ कु० ॥ शून्य द्वीप जलकारणें, लोकें वाहण ढोयां रे ॥ सहु नतरिया ऊहाजथी, जलनां स्थानक जोयां रे ॥ १३ ॥ कु० ॥ लोक संग्रह जलनो करे, हवे ते णे द्वीप मऊारो रे ॥ नमरकेतु राक्षस रहे, निर्दय क्रूर अपारो रे ॥ १४ ॥ कु० ॥ ड सहससेंती परिव रयो, आव्यो तिहां कृतांतो रे ॥ ऊाड्या लोक सहू तेणें, थया मनमां नयनांतो रे ॥ १५ ॥ कु० ॥ केइ नर ऊाड्या काखमां, केइ नर ऊाड्या हाथो रे ॥ केइ पगमांहे चांपी रह्यो, नाग केइ अनाथो रे ॥ १६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ कु० ॥ केइ वाहण चडी चालिया, कुमर एकाकी धीरो रे ॥ सत्त्ववंत उपगारियो, सहु मूकाव्या सधीरो रे ॥ १७॥कु०॥ राक्षसशुं युद्ध मांडियुं, उत्तम चरित्र कुमारें रे ॥ कहे जिनहर्ष कुमर लह्यो, त्रीजी ढाल मझारो रे ॥ १८ ॥ कु० ॥ सर्वगाथा ॥ ६ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ युद्ध करतां जीत्यो कुमर, हार्यो असुर पलाद ॥ सैन्य सहित नासी गयो, ऐ ऐ पुण्य प्रसाद ॥१॥ कुमर सिंधुतट आवियो, खेडी मया झिहाज॥ चतुर चित्तमां चिंतवे, लोकमांहे नहीं लाज ॥२॥ में बोडाव्या सहु जणी, कीधो में उपकार ॥ सहुनें राख्या जीवता, कृतघ्नी थया अपार ॥ ३ ॥ मुजने मूकीने गया, जरदरिया मझार ॥ सहुको आपसवारथी, खोटो ए संसार ॥ ४ ॥ मुख मीठा जूठा हिये, रखे पतिजो कोय ॥ जसु कीजें उपगारडो, सो फरी वैरी होय ॥५॥

॥ ढाल चोथी ॥ अलबेलानी देशी ॥

॥ कुमर विचारे चित्तमां रे लाल, लोक तणो इयो दोष ॥ उपगारी रे॥ जय व्याकुल न खमी शक्या रे लाल, राक्षस केरो रोष ॥ उपगारी रे ॥१॥कु० ॥ जन्मांतर कीधां होशे रे लाल, में केइ विरुआं पाप ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ज० ॥ तेह कर्म आव्या उदे रे लाल, पाम्या एह संताप ॥ ज० ॥ २ ॥ कु० ॥ एहवुं चिंतवी चित्त मां रे लाल, ध्वज बांधी एक वृक्ष ॥ ज० ॥ वन फल खातो तिहां रहे रे लाल, साहसवंत सुदक्ष ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ कु० ॥ द्वीप तणी अधिवासिनी रे लाल, देवीयें दीठो ताम ॥ ज० ॥ कुमर रूप रलियामणुं रे लाल, जाणे अभिनव काम ॥ ज० ॥ ४ ॥ कु० ॥ कामराग व्यापत थइ रे लाल, निपट कुमरनी पास ॥ ज० ॥ आवीने एणि परें कहे रे लाल, वारु वचन विलास ॥ ज० ॥ ५ ॥ कु० ॥ सांभल हो नर साह सी रे लाल, हुं देवी एणे द्वीप ॥ ज० ॥ रूपें मोह्यो ताहरे रे लाल, आवी तुज समीप ॥ ज० ॥ ६ ॥ ॥ कु० ॥ ए तो पुण्यें पामियें रे लाल, सुरनारी संयोग ॥ ज० ॥ तुं प्रीतम हुं पदमिणी रे लाल, मुजशुं भोगव भोग ॥ ज० ॥ ७ ॥ कु० ॥ तुजने मलवा मा हरुं रे लाल, हियडुं धरे उल्लास ॥ ज० ॥ ल्यो लाहो जोबन तणो रे लाल, पूरो मुज मन आश ॥ ज० ॥ ॥ ८ ॥ कु० ॥ रूप निहाली ताहरुं रे लाल, गुण देखी सुविलास ॥ ज० ॥ मन चंचल तुज वांसे थयुं रे लाल, कण मेल्हे नहीं पास ॥ ज० ॥ ए ॥ कु० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मन थाये छे व्याकुलुं रे लाल, ढील न खमणी जाय ॥ ज० ॥ कायामेलो दे हवे रे लाल, घणे कह्यो शुं थाय ॥ ज० ॥ १० ॥ कु० ॥ कुमर कहे देवी सुणो रे लाल, म कहीश एहवी वात ॥ ज० ॥ किहां देवी किहां मानवी रे लाल, सरिखी न मले धात ॥ ज० ॥ ॥ ११ ॥ कु० ॥ परनारी मुज बहेनडी रे लाल, पर नारी मुज मात ॥ ज०॥ हुं बंधव परनारीनो रे लाल, साची मानो वात ॥ ज० ॥ १२ ॥ कु० ॥ परनारी जे भोगवे रे लाल, भलो न भाखे कोय ॥ ज० ॥ एणे भव अपजश तेहनुं रे लाल, परभव दुर्गति होय ॥ ज० ॥ १३ ॥ कु० ॥ हुं छोरु छुं ताहरो रे लाल, तुं छे माहारी माय ॥ ज० ॥ शरणे आव्यो ताहरे रे लाल, कर रक्षा सुपसाय ॥ ज० ॥ १४ ॥ कु० ॥ रीशाणी देवी कहे रे लाल, कां रे मूढ गमार ॥ज०॥ माय बहेन मुजने कहे रे लाल, सगपण किशो विचार ॥ ज० ॥ १५ ॥ कु० ॥ कह्युं करीश नही माहरुं रे लाल, देइश तुजने दुःख ॥ज०॥ जो जाणे हुं जीवतो रे लाल, मुजश्युं भोगव सुख ॥ ज० ॥ १६ ॥ कु० ॥ हुं तूठी तुजने दीयुं रे लाल, अरथ गरथ भंडार ॥ ॥ ज० ॥ रूठी तो हुं तुज भणी रे लाल, मारीश खड़

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ग प्रहार ॥ न० ॥ १७ ॥ कु० ॥ कुमर जणी बीहीव रावचा रे लाल, रूप कीधुं विकराल ॥न०॥ कहे जिन हर्ष सुणो हवे रे लाल, ए चोथी थइ ढाल ॥ न० ॥ ॥ कु० ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ ८२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ काढी खड्ग कहे सुरी, कांरे मरे निटोल ॥ हित कारण तुजने कहुं, मान मान मुज बोल ॥ १ ॥ मुआ मां कांइ नथी, जीवंतां कल्याण ॥ शुं जाये बे ताहरुं, करेज खांचाताण ॥ २ ॥ कुमर कहे कर जोडिने, सां जल मोरी माय ॥ मुजथी एहवुं नवि होवे, क्यारें ए अन्याय ॥ ३ ॥ सुधापानथी जो मरे, चंद्र पडे अंगार ॥ तो पण हुं परनारीने, न करुं अंगीकार ॥ ४ ॥ जो जाणे तो मार तुं, जो जाणे तो तार ॥ आगल पाबल सहु जणी, मरवुं बे एकवार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ बहेनी रही न सकी तिसेंजी ॥ ए देशी ॥

॥ साहस देखी तेहनुं जी, देखी शील उदार ॥ उ त्तमगुण देखी करी जी, देवी कहे तेणि वार ॥ १ ॥ सलूणा ॥ धन धन तुज अवतार ॥ तुज सरीखो कोइ नहीं जी, जोतां एणे संसार ॥ स० ॥ ध० ॥ ए आं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कणी ॥ तुज दरिसण देखी करी जी, पवित्र थया मुज नेण ॥ श्रवण सफल थया माहरा जी, सांभली ताह रां वेण ॥ २ ॥ स० ॥ प्राणथकी पण तुज भणी जी, वाल्हुं लाग्युं रे शील ॥ चित्त चूक्युं नहीं ताहरुं जी, शीलें पामीश लील ॥ ३ ॥ स० ॥ खुशी थइ देवी करे जी, स्तवना बे कर जोड ॥ आगलें मूकी कनकनी जी, रयणनी द्वादश कोड ॥ ४ ॥ स० ॥ पाय प्रण मी देवी गइ जी, समुद्दत्त तिहां शेठ ॥ शेठ कहे मु ज वाहणें जी, आवी बेसो निचिंत ॥ ५ ॥ स० ॥ ध न लेइ प्रवहण चढयो जी, चाल्या समुद्द मझार ॥ भरदरिया विचें चालतां जी, खूट्यो वाहण वारि ॥ ॥ ६ ॥ स० ॥ निगरण सूकां लोकनां जी, जलविण सूकारे होठ ॥ आकुल व्याकुल सहु थयां जी, मर वानी थइ गोठ ॥ ७ ॥ स० ॥ हा हा धिक जलचरथ की जी, अमें थया सत्त्व हीन ॥ जलचर जल पाखें मरे जी, अमें जलमांहे दीन ॥ ८ ॥ स० ॥ दीन व चन विलवे सहू जी, शं आशे जगदीश ॥ जल वि ण प्राण रहे नहीं भ्भी, मरवुं बिशवा वीश ॥ ए ॥ ॥ स० ॥ शास्त्र नीहालीने कहे जी, निर्यामक तेणि वार ॥ वेल उतरशे नीरनी जी, हमणां ए निरधार ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १० ॥ स० ॥ प्रगट होशे जलकांतमय जी, पर्वत जलअस्पृष्ट ॥ कूप छे तेनी उपरें जी, स्वादुवंत जल मिष्ट ॥ ११ ॥ स० ॥ परंपरायें सांभल्युं जी, वली छे शास्त्र मझार ॥ यानपात्र थापी करी जी, तिहां जइ लीजें वारि ॥ १२ ॥ स० ॥ निर्यामक वाणी सुणी जी, खुशी थया सहु लोक ॥ कहे जिन हरख कह्युं इश्युं जी, पांचमी ढाल विलोक ॥ १३ ॥ स० ॥ स र्वगाथा ॥ १११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पण एक महाभय छे इहां, भ्रमरकेतु इणें ना म ॥ राक्षस रहे छे द्वीपमां, तेहनुं छे ए गाम ॥ १ ॥ सहस छ सय कोणप रहे, रात दिवस ते पास ॥ मा हामांस भक्षण करे, क्रूर अधिक उल्लास ॥ २ ॥ समु द्रदेवता तेहने, शपथ कराव्यो एह ॥ तेतो तीर्ण भ क्षण करे, प्रवहण तजवा तेह ॥ ३ ॥ निज इच्छायें ते रहे, वचन सुण्यां श्रवणेह ॥ वात करंतां एटले, प र्वत प्रगट्यो तेह ॥ ४ ॥ लोकें कूप निहालियो, प ण राक्षसनी भीति ॥ तरष्या पण बेसी रह्या, वाह ामां चलचित्त ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल छठी ॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे जल कां न ढ्यो रे, बेसी रह्या तमे केम ॥ चालो थइ उतावला रे, जलविण तूटे प्रेम ॥ १ ॥ कुमरजी ॥ जल केम आणयुं जाय, एतो राक्षसनो भय थाय ॥ एतो वात विषम कहेवाय, एतो फोगट मरण उपाय ॥ २ ॥ कु० ॥ करुणा आणी लोकनी रे, उपगारी मतिमंत ॥ बाण अबाण लेइ करी रे, बोले एम बलवंत ॥ ३ ॥ कु० ॥ वाहणथी हवे उतरो रे, मत बीहो मन मांहि ॥ हुं राक्षक छुं तुम तणो रे, राखुं राक्षस साहि ॥ ४ ॥ ॥ कु० ॥ मुज आगल ए बापडो रे, एहनुं शुं छे जोर ॥ सुर सुरपति पण माहरी रे, चांपी न शके कोर ॥ ५ ॥ कु० ॥ रात्रिचरनी नाणशुं रे, सुपनामां पण प्रीति ॥ यानपात्रथी उतर्यो रे, राजवियांनी रीति ॥ ६ ॥ कु० ॥ कुमर बाण खेंची करी रे, उन्नो कूवा तीर ॥ लोक भाजन लइ आवियां रे, भरवा निर्मल नीर ॥ ७ ॥ कु० ॥ भाजन बांधी रांढवे रे, मूक्युं कूप मझार ॥ कूवाथी नवि निसरे रे, एक चलुं पण वारि ॥ ८ ॥ कु० ॥ जलभृतजल नवि नीसरे रे, इहां कारण छे कोय ॥ पण कोइ खबर करे नहीं रे, रा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

क्रसनो जय होय ॥ ए ॥ कु० ॥ एहवो कोइ बलवं त बे रे, पेशी कूवामांहे ॥ नीर करे कोइ मोकलुं रे, सहुने करे उत्साह ॥ १० ॥ कु० ॥ केणही वचन न मानीयुं रे, कुमर थयो हुशीयार ॥ वारे शेठ कुमारने रे, ताहरो बे आधार ॥ ११ ॥ कु० ॥ कूवामां पेशी करी रे, हुं करुं मुगतुं नीर ॥ लोकतृषाकुल सहु म रे रे, तेणें मुज मन दिलगीर ॥ १२ ॥ कु० ॥ रज्जु विलंबी उतर्यो रे, कूवामांहे कुमार ॥ सात्विक चक्र वर्त्ति सारिखो रे, लोक तणो आधार ॥ १३ ॥ कु० ॥ पण कंचननी जालिका रे, उपर बे अनिराम ॥ बिड्मांहेथी जल जरयुं रे, दीठुं नयणें ताम ॥ १४ ॥ कु० ॥ चतुर विचारे चित्तमां रे, उत्तमचरित्र कुमार॥ कहे जिनहर्ष थयुं इश्युं रे, बठी ढाल मझार ॥ १५ ॥ ॥ कु० ॥ सर्वगाथा ॥ १३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो अहो अचरिज इश्युं, किणें निपायुं एह ॥ कनक कंबानी जालिका, देखी उल्लसे देह ॥ १ ॥ उ रि परि कीधी कुमर, जाली कंबा तेह ॥ जल मारग कीधो प्रगट, लोकां जणी कहेह ॥ २ ॥ जल काढो गाढा थइ, म करो हवे विलंब ॥ तृषामांहे अमृत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लह्यो, फळ्यो अकालें अंब ॥ ३ ॥ जल काढी जाजन जर्यां, हवे कुमर तेणि वार ॥ कूपजींतमां बारणुं, मणि सोपानुं दार ॥ ४ ॥ देखी मनमां चिंतवे, जाग्य परीक्षा काज ॥ हुं परदेशें निसर्यो, ठोडी घरनुं राज ॥ ५ ॥ चित्रकूट स्वामी तणुं, ते पण न लियुं राज ॥ मूकाव्या राक्षसथकी, लोकांतणा समाज ॥ ६ ॥ पाणी में कीधुं प्रगट, सांप्रत कूप मऊार ॥ तृषा गमावी लोकनी, कीधो ए जपकार ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ माहाविदेह क्षेत्र सो हामणुं ॥ ए देशी ॥

॥ कौतुक जोवा कौतुकी, चाल्यो चतुर सुजाण लाल रे ॥ वाट बांधी रे वारु चोरसें, कीजें केहां वखाण लाल रे ॥ १ ॥ कौ० ॥ मणिसोपान सोहामणां, कंचनमय प्रासाद लाल रे ॥ आगल कुमर निहालियुं, देखी थयो आल्हाद लाल रे ॥ २ ॥ कौ० ॥ बेठी पहेली जूमिका, वृद्ध नारी एक लाल रे ॥ जइने तिहां जजो रह्यो, बोली आणी विवेक लाल रे ॥ ॥ ३ ॥ कौ० ॥ कां रे मूरख मानवी, हीणपुण्य बुद्धि हीण लाल रे ॥ जूलो आव्यो जमघरें, आऊखुं थयुं क्षीण लाल रे ॥ ४ ॥ कौ० ॥ कानेंही नवि सांज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

च्यो, भ्रमरकेतु किनास लाल रे ॥ कुमर कहे हुं तो लखुं, मैं जीत्यो छे तास लाल रे ॥ ५ ॥ कौ० ॥ पूछुं तुजने मावडी, केहनो ए प्रासाद लाल रे ॥ तुं कोण केम बेठी इहां, कहे मूकी विखवाद लाल रे ॥ ६ ॥ ॥ कौ० ॥ वचन सुणी बलवंतनां, वृद्धा कहे सुण वीर लाल रे ॥ तुं सत्यवंत शिरोमणि, दीसे गुण गंभीर लाल रे ॥ ७ ॥ कौ० ॥ राक्षसद्वीप इहां दूकडो, लंका नयरी ईस लाल रे ॥ भ्रमरकेतु राक्षस बली, राज्य करे अवनीश लाल रे ॥ ८ ॥ कौ० ॥ कन्या तास मदालसा, सयल कलानी जाण लाल रे ॥ लक्षण अंगे शोभतां, रूपें रति पिकवाण लाल रे ॥ ए ॥ कौ० ॥ देवकुमरीने सारिखी, एहवी नहिं कोइ अन्य लाल रे ॥ राय भणी वाल्ही घणुं, पोतें पुण्य अगण्य लाल रे ॥ १० ॥ कौ० ॥ भ्रमरकेतु नृप एकदा, नैमित्तिक पूछेह लाल रे ॥ मुज कन्या वर कोण होशे, कहे विचारी तेह लाल रे ॥ ११ ॥ ॥ कौ० ॥ एहने वर भूचर होशे, क्षत्रिय राजकुमार लाल रे ॥ हिमवंत सीमा राज्यनी, दक्षिणलंका धार लाल रे ॥ १२ ॥ कौ० ॥ महाराजाधिराजा होशे, दल बल जास अपार लाल रे ॥ विद्या

धर नर राजवी, सेवा करशे तास लाल रे ॥ १३ ॥ ॥ कौ० ॥ वयण सुणीने तेहनां, खेद लह्यो नूपाल लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष किश्युं हुश्ये, हाहा सातमी ढाल लाल रे ॥ १४ ॥ कौ० ॥ सर्वगाथा ॥ १५२॥

॥ दोहा ॥

॥ नूचर पुत्री परणशे, कन्या देवकुमार ॥ खेचर श्युं खूटी गया, एहवो करी विचार ॥ १ ॥ समुद्रमां हे पर्वत शिखर, कूपमांहे करी द्वार ॥ मोहोटो मद्दे ल रच्यो इहां, कोइ न जाणे सार ॥ २ ॥ कन्याने राखी इहां, राखी मुज रखवाल ॥ पंचरतन कुमरी न णी, दीधां बे नूपाल ॥३॥ हुं दासी बुं तेहनी, भ्रमर केतु लंकेश ॥ धनधान्यादिक मोकले, कूपवाट सुविशे ष ॥ ४ ॥ कूआमांहे पडण न्नय, जाली कनक बणा य ॥ जतन करी राखी इहां, नूचर केम परणाय॥५॥

॥ ढाल आठमी ॥ जीहो मिथिला नगरीनो राजियो॥

॥ ए देशी ॥

॥ जीहो एकदिन अपर निमित्तीयो, जीहो पूछे रा क्स तास ॥ जीहो कहेने मुज कन्या तणो, जीहो कोण वर थाशे न्नास ॥ १ ॥ लंकापति पूछे तास विचार ॥ ए आंकणी ॥ जीहो पूरवली परें तेणें कह्युं,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जीहो चढियो क्रोध अपार ॥ २ ॥ लं० ॥ जीहो भ्रम रकेतु भाखे वली, जीहो केम जाणीजें तेह ॥ जीहो भाखे ताम निमित्तियो, जीहो सांभल नृप सुसनेह ॥३॥ लं० ॥ जीहो जांत्रिक जन भखवा भणी, जीहो तुं गयो द्वीपमझार ॥ जीहो तुजने जीत्यो एकले, जीहो ते नर तुं अवधार ॥४॥लं०॥ जीहो मास एक थयो तेहने, जीहो सांभली चडियो क्रोध ॥ जीहो राक्षसदल मेली करी, जीहो हणवा गयो ते जोध ॥५॥ लं० ॥ जीहो आगल शुं आशे हवे, जीहो ते जाणे जगदीश ॥ जीहो कुमर विचारे ते सही, जीहो राक्षस तणो अधीश ॥६॥ लं० ॥ जीहो एतो में जाणयो हवे, जीहो मुज वैरीनुं गाम ॥ जीहो घाट वाट रोकी रह्यो, जीहो मुज मारेवा काम ॥७॥लं०॥जीहो कूड कपट मायावीनी, जीहो ए राक्षसनी जात॥जीहो जतन करी रहेवुं इहां, जीहो प्रगट न करवी वात ॥८॥ लं० ॥ जीहो कुमरी ताम मदालसा, जीहो रूप कला भंडार ॥ जीहो देवभूवनथी भतरी, जीहो जाणे देवकुमारि ॥९॥लं०॥ जीहो कुमररूप देखी करी, जीहो मोही कुमरी ताम॥ जीहो वदन कमल जोइ रही, जीहो जेम दालिडी दाम ॥ १० ॥ लं० ॥ जी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हो रायकुमर पण तेहनुं, जीहो मोह्यो देखी रूप ॥ जीहो चपल नयण चोटी गयो, जीहो जाग्यो प्रेम अनूप ॥ ११ ॥ लं० ॥ जीहो बेहुनो राग जोइ करी, जीहो वृद्ध नारी ताम ॥ जीहो गंधर्व विवाह करी तिहां, जीहो परणाव्यां तेणे गाम ॥ १२ ॥ लं० ॥ जीहो पृथिव्यादिक चारे नलां, जीहो पांचमुं रतन आकाश ॥ जीहो प्राज्ञाविक पांचे नलां, जीहो देवा धिष्टित खास ॥ १३ ॥ लं० ॥ जीहो पांच रतन मदा लसा, जीहो लेइ वृद्ध रे नारि ॥ जीहो आव्यो कुमर नतावलो, जीहो तेणिहिज कूप मझार ॥१४॥ लं० ॥ जीहो समुद्दत्तना आदमी, जीहो जल काढे तिणी वार ॥ जीहो कहे जिन हर्षे शुं दवे, जीहो नत्तम च रित्रकुमार ॥ १५ ॥ लं० ॥ सर्वगाथा ॥ १७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बाहिर काढो मुज नणी, नाखे एम कुमार ॥ रज्जु प्रयोगें निसर्त्यां, त्रणे जण तेणि वार ॥ १ ॥ सघ ले विस्मय पामियो, अचरिज थयुं अपार ॥ जलदेवी के किन्नरी, के अपछर अवतार ॥ २ ॥ कुमर नणी पूछे सहू, सुरकन्या कोण एह ॥ सहु वृत्तांत सुणी इश्युं, हरख्या सहु नर तेह ॥ ३ ॥ प्रवहण चढीने चालि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

या, धरता मन आणंद ॥ वलि दिवस केटले गए, जल खूटयुं नही बुंद ॥ ४ ॥ लोक सहु आकुल थया, बूट ए लाग्या प्राण ॥ मरण मान सहुको थया, सहुनी थाशे हाण ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ पारधीयानी देशी ॥

॥ जांखे एम मदालसा रे, विनय करीने नेह रे ॥ प्रीतमजी ॥ मरशे सहु ए मानवो रे, पाणी पाखें एह रे ॥१॥ प्रीतमजी ॥ तुमें मारा आतमजी, तमने कहुं जेम तेमजी ॥ जल मलशे कहो केमजी के ॥ करवो करवो रे उपाय कोइ तेह रे ॥ २ ॥ प्रीत० ॥ ए आंकणी ॥ कुमर कहे जल केम मले रे, खारा समुद्रम झार रे ॥ प्री० ॥ द्वीपकूप कोइ नहीं रे, सुणी सुकुलिणी नार रे ॥ प्री० ॥ ३ ॥ मुज आजरण करंडियो रे, स्वामी उघाडो एह रे ॥ प्री० ॥ पांच रतन एमां हे बे रे, गुण सांजल तुं तेह रे ॥ ४ ॥ प्री० ॥ जूदेवाधिष्टित बे रे, पूजी मागे पास रे ॥ प्री० ॥ थाल कचोलां कनकनां रे, विविध जाजन दे खास रे ॥ ५ ॥ ॥ प्रीत० ॥ शयनासन आदिक जलां रे, मग गोधूम सुशालि रे ॥ प्री० ॥ जूषण मणिकंचन तणां रे, प्रगट हुवे ततकाल रे ॥ ६ ॥ प्री० ॥ नीररतन नज मूकीयें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, वंछित जलनी वृष्टि रे ॥ प्री० ॥ शालि दाल घृत सुखडी रे, तेज रतनें सुवृष्टि रे ॥ ७ ॥ प्री० ॥ वायुर तन गगनें धरयुं रे, मृदुअनुकूल समीर रे ॥ प्री० ॥ गगन रतन पटकुल दे रे, देव दुष्यादिक चीर रे ॥८॥ ॥प्रीत०॥ करुणा करी प्रीतम तुमें रे, दुःखिया लोक निहाल रे॥प्री०॥ पांच रतन लेइ करी रे, नीर तृषा तुं टाल रे॥९॥प्री०॥ नदी न निज पाणी पीये रे, निजफ ल वृक्ष न खाय रे ॥प्री०॥ मेह न मागे सर भरे रे, पर उपगारें थाय रे ॥१०॥प्री०॥ जे अविलंबें वेलीयां रे, आपद दे आधार रे ॥ प्री० ॥ शरणें राखे मारतां रे, ते मोहोटा संसार रे ॥ ११ ॥ प्रीत० ॥ उपगारी तम सारिखा रे, जग सरज्या किरतार रे ॥ प्रीत० ॥ पर नां दुःख भाजन भणी रे, वली करवा उपगार रे ॥ ॥ १२ ॥ प्रीत० ॥ नारी वचन एहवां सुणी रे, ह र्षित थयो कुमार रे ॥ प्रीत० ॥ धन्य ए नारी सुलक्ष णी रे, धन्य एहनो अवतार रे ॥ १३ ॥ प्रीत० ॥ रा क्षस कुलें ए उपनी रे, एहवी दीनदयाल रे ॥ प्रीत०॥ कहे जिनहर्ष सोहामणी रे, ए अष्ट नवमी ढाल रे ॥ १४ ॥ प्रीत० ॥ सर्व गाथा ॥ १९० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ नारी वयण सुणी करी, प्रमुदित थइ कुमार ॥ कूआथंनें बांधियुं, नीररतन तेणि वार ॥ १ ॥ मेघवृ ष्टि हुइ तुरत, सहू नस्यां जलपात्र ॥ लोक खुशी सहु को थयां, शीतल कीधां गात्र ॥ २ ॥ पांचे रतन प्र नावथी, विविध किया नपगार ॥ लोक सहु सेवा क रे, गुण मोहोटो संसार ॥ ३ ॥ गुण पूजाए लोक मां, गुणने आदर थाय ॥ राजा परजा गुणथकी, स हुको लागे पाय ॥ ४ ॥ समुइत्त दीठी नयण, नारी रतन एक दीस ॥ कामें व्यामोहित थयो, ऐऐ रूप जगदीश ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ करम परीक्षा करण

कुमर चढ्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मनमांहे पापी रे शेठ एम चिंतवे रे, एहनी ना री रे होय ॥ तो हुं जाणुं रे नव सफलो थयो रे, मु ज सरिखो नहीं कोय ॥ १ ॥ मनमां० ॥ एहवी ना री रे पुण्यें पामियें रे, के तूठे जगदीश ॥ पुण्यविण न मिले रे एहवी गोरडी रे, जाणुं विशवावीश ॥ ॥ २ ॥ म० ॥ दाय नपायें रे ए लेवी सही रे, ए वि ण रह्युं न जाय ॥ एहवी नारी रे जो हुं नोगवुं रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तो वंछित सुख थाय ॥ ३ ॥ म० ॥ आवो आवो नाइ रे नेला बेसीयें रे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ पा णीवल मनें रे तुज विण नवि गमे रे, जीवन प्राण आधार ॥ ४ ॥ म० ॥ मननी वातो रे बेशी कीजि यें रे, सुख दुःखनी एकांत ॥ गुणवंत पाखें रे केही गोठडी रे, गुणवंत शुं नीरांत ॥ ५ ॥ म० ॥ तुं उ पगारी रे नांजे पर दुःखडां रे, तुज समो नर नहीं कोय ॥ तुज मुख दीठां रे तन मन उल्लसें रे, हीयडुं हर्षित होय ॥ ६ ॥ म० ॥ मोहनगारा रे तें मुज म न हरयुं रे, तुज विण रह्युं रे न जाय ॥ मोहनी लगाइ रे तें कांइ प्रेमनी रे, तुज पांखे न सुहाय ॥ ७ ॥ ॥ म० ॥ दिन तो कीजें रे तुज मन गोठडी रे, दिव स संहेलो रे जाय ॥ रात्रें जाजें रे ताहरे स्थानकें रे, शेठ कहे चित्त लाय ॥ ८ ॥ म० ॥ अरज करुं बुं रे तुजने एटली रे, अरज सफल कर मित्त ॥ पर उप गारी रे कर उपगारडो रे, चतुर खुशी कर चित्त ॥ ॥ ए ॥ म० ॥ जे आपणनें रे वांछे वालहा रे, ते हने न दीजें पूंठ ॥ तन मन दीजें रे तेहने आप णुं रे, आदर दीजें उक्किठ ॥ १० ॥ म० ॥ वचन न लोपे रे उत्तम कुल तणो रे, नेह दीये केम तेह ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जेम तेम जोडे रे प्रात सोहामणी रे, निगुण न पाले तेह ॥११॥ म० ॥ घणुं घणुं तुजने रे कहीयें किश्युं रे, तुं छे दीनदयाल ॥ कहे जिन हर्ष विचारो वालहा रे, ए अइ दशमी ढाल ॥१२॥म०॥ सर्वगाथा ॥२०७॥

॥ दोहा ॥

॥कुमरी कहे मदालसा, सांभल कंत सजाण ॥ शेठ तणी ए प्रीतडी, हानि जाण निज प्राण ॥१॥ कंत म राचे एहशुं, ए में कपटी दीठ ॥ कालाशिरनो आदमी, होये दुष्ट मुहमिठ ॥ २ ॥ अति विश्वास न कीजियें, कंत कहूं कर जोडि ॥ एक कनक अरु कामिनी, एहथी अनरथ कोडि ॥३॥यतः ॥ पुष्पं दृष्ट्वा फलं दृष्ट्वा, दृष्ट्वा च नव यौवनं ॥ स्त्रिणं पतितं दृष्ट्वा, कस्य नो चलते मनः ॥१॥ कुमर कहे सांभल प्रिये, ए उपगारी शेठ॥ आपण ऊपर एहनी, सुनजर शीतल दृष्ट ॥ ४ ॥ मुह मीठा जूठा हिये, हुं न पतीजुं ताप ॥ मीठा बोलो मो रियो, साप सपूछो खाय ॥ ५ ॥ धूता होय सलक्ष णा, कुसती होय सलक्ष ॥ खारां पाणी सीयलां, ब हुफल होय अखक्ष ॥ ६ ॥ वयण नारीनां अवगणी, निशिवासर रहे पास ॥ अवसर देखी नाखियो, सा यरमांहे तास ॥ ७ ॥ कोलाहल करी उठियो, पडियो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

समुद्रमझार ॥ मित्र सनेही माहरो, उत्तमचरित्र कुमार ॥८॥ जाण्युं तुरत मदालसा, ए पापीनां काम ॥ नाख्यो जलमां मुजपति, रोवण लागी ताम ॥ ए ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥ नावननी देशी ॥

॥ परम सनेही वालम माहरो रे, आतमनो आधार ॥ मुज अबलाने मूकी एकली रे, सायरमां निरधार ॥ १ ॥ प० ॥ हुं कंता कहेती इण नीचनो रे, म करीश तुं विश्वास ॥ माहरुं कह्युं न मान्युं नाहला रे, तो फल पाम्यां तास ॥ २ ॥ प० ॥ तें नइक नोले जाण्युं सहु रे, धवलुं तेटलुं दूध ॥ पण कपटीनुं कपट नलख्युं नहीं रे, हियडुं जास अशुद्ध ॥ ३ ॥ प० ॥ धूतारा तो मुह मीठा होये रे, पण हियडामां पाप ॥ नुंडुं करतां ते बीहे नहीं रे, नपजावे संताप ॥ ४ ॥ प० ॥ मुख दीवाली होली हियडले रे, एहवा डुर्जन होय ॥ पग पग नाखे पापी पासला रे, रखे पतीजो कोय ॥ ५ ॥ प० ॥ आशा वेदी माहरी पापीयें रे, कीधी निपट निराश ॥ जीवन विण हुं जीवुं केही परें रे, नाखे प्रबल निःश्वास ॥६॥ ॥ प० ॥ जाणे पावसजलधर नल्लस्यो रे, नयण न खंडे धार ॥ पियु पियु चातक ज्युं प्रमदा करे रे, जा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ग्यो विरह अपार ॥ ७ ॥ प० ॥ क्षण रोवे क्षण जोवे दश दिशें रे, क्षण क्षण आये चेत ॥ फूरे यूथ टली मृगली परें रे, पिउ तोडयुं कांइ हेत ॥ ८ ॥ प० ॥ प्राण होशे माहरां हवे प्राहुणा रे, तुज विण सुगुणा नाह ॥ ए दुःख में खमणुं जाये नहीं रे, विरह लगायो दाह ॥ ए ॥ प० ॥ में चिंतामणि रतन लह्युं हतुं रे, राख्युं करी जतन ॥ पण गजे नहीं पुण्य विहूणडा रे, रांकां घरे रतन ॥ १० ॥ प० ॥ किश्युं करुं सांजल साहेलडी रे, हियडे दुःख न समाय ॥ हीयडुं फाटे रत्नतलावशुं रे, केम जीवुं मोरी माय ॥ ११ ॥ प० ॥ प्राणसनेही जलनिधिमां पड्यो रे, मने मलवानी आश ॥ झंपापात करुं जो नीरमां रे, तो पोहोचुं पियु पास ॥ १२ ॥ प० ॥ हवे जीव्यानो स्वाद नहीं किश्यो रे, घर छोडीजें जी प्राण ॥ ढाल थइ पूरी अग्यारमी रे, कहे जिनहर्ष सुजाण ॥ ॥ १३ ॥ प० ॥ सर्वगाथा ॥ २२ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रीतमविण जीवुं नही, छंडिश पापी प्राण ॥
निशदिन वींधे मुज ज्रणी, पंचबाण सपराण ॥ १ ॥
काया पावक संग्रहो, जीव ग्रहो जमराण ॥ रूप रसा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तल संग्रहो, गुण थाउ पाषाण ॥ २ ॥ मरवाने उद्यत थई, वृद्धा कहे तेणि वार ॥ म मर म मर मूरख म मर, सांजल कहुं विचार ॥ ३ ॥ फांसो विष ज्ञक्षण करे, पाणी अग्निप्रवेश ॥ गिरितरुवरथी पडी मरे, कुमरण कहियें एस ॥ ४ ॥ एह मरणथी जवो जवें, लहियें मरण अछेह ॥ पुण्यें मलशे जीवतो, तुज प्रीतम सुसनेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ नणदल हे मोहन मुदरी
ले गयो ॥ ए देशी ॥

॥ शेठ कहे आवी करी, रूडां वयण रसाल ॥ हे वनिता सुण वातडी, तुं म पड म पड फुःखजाल ॥१॥ रमणी हे मान वयण तुं माहरुं, माहरुं वयण तुं पाल ॥र०॥ए आंकणी ॥ मित्र अमूलक माहरो, उत्तमचरित्र कुमार ॥ ते मुजने नवि वीसरे हो, साले हियडा मकार ॥२॥ र०॥ पुण्य हुवे तो पामियें, मन मान्या मित्त ॥ नयणवयण रलियामणा हो, पाले अविहड प्रीत ॥३॥ र०॥ खाणां पीणां खेलणां, न गमे मीठा नाद ॥ वात विगत गुणगोठडी हो, लागे सहु निःस्वाद ॥४॥ र०॥ फुःख म कर तुं गोरडी, फुःख कीधे शुं थाय ॥ मूउ ते जीवे नही हो, जो वरसां सो थाय ॥५॥ र० ॥ चतुर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नारी तुज सारिखी, अवर न दीठी कांय ॥ सुख नो गव संसारना हो, मुजशुं प्रीत बनाय ॥ ६ ॥ र० ॥ राणी धणीयाणी करुं, मारुं घर तुज हाथ ॥ जीवंतां विरहूं नही हो, मुज तुज अविचल साथ ॥ ७ ॥ ॥ र० ॥ तेतो परदेशी हतो, जाति वंश नहीं शुद्ध ॥ शुं फूरे वे तेहने, तुंही कुलवंत मुद्ध ॥ ८ ॥ र० ॥ पानफूल विचें राखशुं, इहविश नहीं किण वात ॥ चाकरनी परें चाकरी हो, करशुं तुज दिन रात ॥ ए ॥ र० ॥ ले लाहो जोबन तणो, सफलो कर अवतार ॥ तन धन जोबन प्राहुणो हो, जातां न लागे वार ॥ १० ॥ र० ॥ तुजशुं लागी प्रीतडी, तुज विण रह्युं न जाय ॥ तुज मलवा मन उल्लसे हो, अवर न कोइ सुहाय ॥११॥ र० ॥ ते माटे तुजने कहुं, समऊ समऊ गुणवंत ॥ हठ वोडी हितशुं मलो हो, तुं कामिनी हुं कंत ॥ १२ ॥ र० ॥ तुजशुं मुजशुं प्रीतडी, सरजी सरजणहार ॥ नावि न मटे केहथी हो, जो करे लाख प्रकार ॥ १३ ॥ र० ॥ तुं कोण हुं कोण किहांथकी, आवी मलियो संच ॥ विधिनो लीखियो हूतो हो, तुज मुज प्रेम प्रपंच ॥ १४ ॥ र० ॥ कोण करावे कोण करे, करता करेशुं होय ॥ ढाल थइ ए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बारमी, जिनहर्ष कहे तुं जोय ॥१५॥२०॥स८॥३४५॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी ते शेठनां, कुमरी कीध विचार॥ ए पापी मुज त्नांजशे, शीलरयण शणगार ॥१॥ कूड कपट करी राखवुं, शील अमूलक एह ॥ चिंतवे एम मदालसा, वयण कहे सुसनेह ॥ २ ॥ सुणो शेठ साहिब तुमें, वयण कह्युं सुप्रमाण ॥ मरण थयुं प्री तम तणुं, दशदिन तेहनी काण ॥ ३ ॥ तुमने गमशे तेम होशे, चडी तुमारे हाथ ॥ परमेशर मेळ्यो हवे, ताहरो माहारो साथ ॥ ४ ॥ उतावला सो बावरा, धीरें सब कछु होय ॥ माली सिंचे सो घडा, रुतु आवे फल होय ॥ ५ ॥ किणहीक नगरें जाइयें, मास दिव सने बेह ॥ पुरपतिनी लेइ आगना, आवीश ताहरे गेह ॥६॥ नाम म लेइश माहरुं, हुं छुं ताहरी नार ॥ शेठ त्नणी कीधो खुशी, कुमरी बुद्धि विचार ॥७॥

॥ढाल तेरमी॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी॥

॥ वृद्धा कहे कुमरी त्नणी रे, करियें शील जतन्न ॥ त्रिज्नुवनमांहे दोहेलुं रे, लहेतां एह रतन्न रे ॥१॥ वहे नी, सांत्नल माहारी वात ॥ शीलें अरि करी केशरी रे, न करे कोइ घात रे ॥ व० ॥ ए आंकणी ॥ वायु

रतन सुप्रसादथी रे, तट लहियें कुशलेह ॥ तिहां जो मुज प्रीतम मले रे, तो रहीयें निज गेह रे ॥३॥ब०॥ न मलें तो आपण बेहुरे, लेशुं संजम भार ॥ वयण सुणी कुमरी इस्यां जी, हरखी चित्त मझार रे ॥३॥ ॥ ब० ॥ मानी वात मदालसा रे, कीधुं अंगीकार ॥ कुमर तणो हवे सांभलो रे, जेह थयो अधिकार रे ॥ ॥ ४ ॥ ब० ॥ जलनिधिमांहे कुमर पड्यो रे, मकर ग्रह्यो ततकाल ॥ सायर तट ते आवियो रे, धीवर नांख्यो जाल रे ॥ ५ ॥ ब० ॥ महामकर घरे आणियो रे, कीधो तास विनाश ॥ मत्स्यसुंदरथी नीसर्यो रे, जीवित मानोलाश रे ॥ ६ ॥ ब० ॥ देखी धीवर चिंतवे रे, मोहोटो नर छे एह ॥ सेवा खिजमत सहु करे रे, कुमर रहे तस गेह रे ॥ ७ ॥ ब० ॥ हवे समुद्दत्त शेठनां रे, वाहण चाल्यां जाय ॥ वायुरतन पूजा करी रे, आएयां बे दिनमांय रे ॥ ८ ॥ ब० ॥ तिहां अजाएयां आवियां रे, मोटपल्ली वेलाकुल ॥ राजा नरवर्मा तिहां रे, जिनधर्मशुं अनुकूल रे ॥ ए ॥ ॥ ब ॥ समुद्दत्त लेइ भेटणुं रे, लेइ कुमरी साथ ॥ रायसभायें आवीयो रे, भेट्यो अवनीनाथ रे ॥ १० ॥ ॥ ब० ॥ आदर नृपें बहु आपियुं रे, पूछ्यो कुशल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लाप ॥ ए कोण नारी शेठजी रे, सुरकन्या गुण व्याप रे ॥ ११ ॥ ब० ॥ शेठ कहे स्वामी सुणो रे, चंडद्वीपें लही एह ॥ नारी एहनी स्वामिनी रे, सुंदर सुगुण सनेह रे ॥ १२ ॥ ब० ॥ तुम आदेशें माहरी रे, थाये एह कलत्र ॥ बोली तास मदालसा रे, भाखे किश्युं अखत्र रे ॥ १३ ॥ ब० ॥ राजा आगल पापीयो रे, भांखे एह अलीक ॥ राजा जो न्यायी हुवे रे, तो तु ज लावे नीक रे ॥ १४ ॥ ब० ॥ निर्लज शुं लाजे न ही रे, जपतो आलपंपाल ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थइ रे, तेरमी ढाल रसाल रे ॥१५॥ ब० ॥ सर्वगाथा ॥२७१॥

॥ दोहा ॥

॥ लाज करी कुमरी कहे, वयण राय अवधार ॥ मुज पतिने एणे पापीयें, नाख्यो समुद्रमझार ॥ १ ॥ राय सुणी कोपें चड्यो, घाल्यो कारागार ॥ माल पां च सय पोतनो, मूक्यो निज भंडार ॥ २ ॥ सांभल पुत्री नृप कहे, रहे तुं मुज आवास ॥ पुत्री मुज ति लोत्तमा, रहे तुं तेहनी पास ॥ ३ ॥ बेहेन तेह डे ता हरे, सखी तणे परिवार ॥ सुखें समाधें रहे सदा, चिंता दूर निवार ॥ ४ ॥ दीन भणी तुं दान दे, जोडि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सयल दुःखदाइ ॥ किणही तट लागो होशे, तो निर त करशे तुज नाह ॥ ५ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥ हो मतवाले साजनां ॥ ए देशी ॥

॥ सुखे रहे कुमरी तिहां, मननी बीक सहु भागी रे ॥ राय मानी पुत्री करी, पुण्यदशा तस जागी रे॥ ॥ १ ॥ सु० ॥ पंच रतन सुपसायथी, तिहां दान नि रंतर आपे रे ॥ श्रीजिनधर्म करे सदा, सहुने जिनधर्म थापे रे ॥२॥सु० ॥ सतीजनोचित कन्यका, ले नियम मले नहीं सांइ रे ॥ त्यांसुधी भूयें सुयवुं, स्नानादिक न करवुं कांइ रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ भारे वस्त्र न पहेरवां, पहेरुं नहीं फूलसुगंधो रे ॥ अंगविलेपण नवि करुं, तंबोल तजुं प्रतिबंधो रे ॥४॥सु०॥ स्वादिम में तजवुं सही, नीलां फल भक्षण नवि करवां रे ॥ नियम ली यो सहु शाकनो, दूध दहीं मही परिहरवां रे ॥ ५ ॥ ॥ सु० ॥ सूस सहूं सुखडी तणुं, साकर गुड खांड न खावे रे ॥ पायस सरस न जीमवुं, जिमवा कारजें न वि जावे रे॥६॥सु०॥ एक भुक्त नित्य जमीवुं, कारण विण किहांये न जावुं रे ॥ गोखें पण नवि बेसवुं, लो क स्थिति चित्त न लावुं रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ सरस कथा करवी नहीं, गाथा काव्य श्लोक सरागी रे ॥ कानें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पण सुणवां नहीं, करवी तो कथा वैरागी रे ॥ ८ ॥ ॥ सु० ॥ वात न करवी पुरुषशुं, चित्राम पुरुष न विलोकुं रे ॥ नाटक रूपाल जोवुं नहीं, जातुं चंचल चित्त रोकुं रे ॥ ए ॥ सु० ॥ एहवी ए लीधी आखडी, पियु न मले तिहां लगें पालुं रे ॥ ध्यान करुं नव कारनुं, पूजा करी पाप पखालुं रे ॥ १० ॥ सु० ॥ अन्य दिवस धीवर सहू, साथें करि उत्तम कुमारो रे ॥ कांहिक काम वशें मली, आव्या मोटपट्टी पा रो रे ॥ ११ ॥ सु० ॥ नरवर्मराय मंडावियो, पुत्री कारण आवासो रे ॥ अति मनोहर सात भूमियो, दीगं होय उल्लासो रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ पुरनी शोभा जोवतो, तिहां आव्यो कुमर सुजाण रे ॥ कामका रीगर तिहां करे, निजशास्त्र सहूना जाण रे ॥ १३ ॥ ॥ सु० ॥ गाम गाम ते वीसरे, खोटां घर किहां चणा वे रे ॥ ढाल अठ ए चौदमी, जिनहर्ष कुमार शीखा वे रे ॥ १४ ॥ सु० ॥ सर्वगाथा ॥ २९० ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर वास्तुविद्या विकुष, पण न मले अहंकार ॥ सूत्रधारने शीखवे, सघलोही अधिकार ॥ १ ॥ चम त्कार चित्त पामिया, चिंते सहु सूत्रधार ॥ ए नर दीसे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

छे सही, विश्वकर्मा अवतार ॥ २ ॥ भक्ति करे सहु कुमरनी, पासें राख्यो तास ॥ पुर खोळ्यो सहु धीव रें, न लह्यो थया उदास ॥ ३ ॥ इहां आवी खोयुं रतन, अमनें पड्यो धिक्कार ॥ एम निज आतम निंदता, सहु गया तेणि वार ॥ ४ ॥ रायकुमरनी सानिध्यें, पूरो थयो आवास ॥ सप्तभूमि सुरगृह जोइयो, माहा ज्योति सुप्रकाश ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥
॥ ए देशी ॥

॥ पूरु थयुं मंदिर कुमरीनुं, जोवा आव्यो राय जी ॥ देखीने रलियायत हुउ, कीधो बहुत पसाय जी ॥ १॥ उत्तमचरित्र कुमार निहाळ्यो, रूपकला गुणजोइ जी ॥ राजा नरवर्म चित्त विचारे, छे राजनपुत्र कोइ जी ॥ २ ॥ पू० ॥ एहवुं नृप चिंतवीने वलियो, कुमरी रमवा काज जी ॥ वनवाडीमांहे संचरियां, सइयर तणे समाजजी ॥३॥पू०॥ डशीयो भूयंग क्रीडा करं तां, ततक्षण थइ अचेत जी ॥ उपाडीने मंदिर आणी, नयण धवल थयां श्वत जी ॥ ४ ॥ पू० ॥ अंगो अंग महाविष व्याप्युं, गारुडविद्या जाण जी ॥ ते सहु ते डाव्या राजवीए, उजे कुमरी प्राण जी ॥५॥पू०॥ म

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

णि मूत्री महुरा बहु आएया, कीधा कोडि उपाय जी॥ पण समाधि थाय नहीं किमही, किमही विष नवि जायजी ॥६॥पू०॥नगरमांहे पडहो फेराव्यो, जे कोइ विद्यावंत जी॥ रायतणी कन्या जीवाडे, ते पसाय ल हंत जी ॥७॥पू०॥ अर्ध राज कुमरी नृप आपे, कुमर सुएयो विरतंत जी ॥ पडह ग्रन्यो ततक्षण आवीने, उपगारी गुणवंत जी ॥८॥ पू० ॥ उत्तम रायसमीपें आव्यो, तेहिज नर ए होय जी॥ आदर देई पासें बेसा ख्यो, स्वारथ मीठो होय जी ॥ए॥ पू० ॥ एक स्वार्थ ने वली गुण मांहे, आदर लहे अपार जी॥ कन्या आ णी तिहां उपाडी, कुमर करे उपगार जी ॥ १० ॥ ॥ पू० ॥ मंत्र गणी पाणीशुं गांटी, कुमरी थइ सचेत जी ॥ कर जोडी राजा गुण गावे, धन्य धन्य तुं कुलके त जी ॥ ११॥ पू० ॥ तें उपगार कियो मुज मोहोटो, दीधुं जीवितदान जी॥ मुज कन्याने तें जीवाडी, विद्या तणा निधान जी ॥१२॥ पू० ॥ तुजने शो उपगार क रुं हुं, करुणावंत कृपाल जी ॥ ए जिनहर्ष कन्या तुज दीधी, परणो पन्नरमी ढाल जी ॥१३॥ पू० ॥ ३०८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय विचारे चित्तमां, ए नर छे कुलवंत ॥ राज्य

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कन्या देइ तेहने, हुं हवे रहुं निश्चिंत ॥१॥ जोषी तुरत तेडावियो, जांखे एणि परें राय ॥ परणे कुमरी त्रिलोचना, वासर लगन बताय ॥२॥ जोई पुस्तक टीपणुं, लगन कियो निरधार ॥ एह दिवस निर्दोष छे, जोतां दिवस हजार ॥ ३ ॥ घणे महोत्सवशुं नृपति, वर कन्या परणावि ॥ दीधो राज्यजंडार सहू, करमोचन प्रस्ताव॥४॥ कुमरी काज करावियो,सप्तजूमियो आवास ॥ राय दियो रहेवा जणी, तिहां जोगवे विलास॥५॥

॥ ढाल शोलमी ॥ पंथीडानी देशी ॥

॥ दासीने कहे हवे मदालसा रे, प्रीतमनो कांइ न थइ सार रे ॥ सायर मांहे बूड्यो ते सही रे, हवे हुं जीवुं शे आधार रे ॥ १ ॥ दा० ॥ दान दीयो में दीन दुःखी जणी रे, साते क्षेत्रें वावरयुं वित्त रे ॥ श्रावक धर्म यथाशक्तें करे रे, जिनवरपूजा चोखे चित्त रे ॥ ॥ २ ॥ दा० ॥ हवे मुज बहेनी कुमरी त्रिलोचना रे, तेहने देइ पंच रतन्न रे ॥ दीक्षा लेइश हुं जिनवरतणी रे, पालिश संयम करिय जतन्न रे ॥३॥ दा० ॥ दासी कहे सांजल तुं स्वामिनी रे, म कर म कर मनमांहे विषाद रे ॥ कोइ परदेशी वर्यो त्रिलोचना रे, जेहनो सहु बोले यशवाद रे ॥ ४ ॥ दा० ॥ रूपकला गुण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जेहमांहे घणा रे, सांजलीयें जोए जेहनी ख्यात रे ॥ खबर करुं जो दे तुं आगन्या रे, कुमरी कहे तो जो मोरी मात रे ॥५॥ दा० ॥ आवी कुमरी घर ञतावली रे, दीठो उत्तमचरित्र कुमार रे ॥ गुप्ताकृति देखी नवि उलख्यो रे, दीठो सुंदररूप आकार रे ॥ ६ ॥ दा० ॥ कृण एक वात करी दासी वली रे, आवी निजकुमरी नी पास रे ॥ सांजल माहारी वात मदालसा रे, दीठो पुरुष जइ आवास रे ॥ ७ ॥ दा० ॥ रूपें तो तुज ज रतार सारिखो रे, पण कांइक आकृतिमां फेर रे ॥ सां जली जाग्यो प्रेम मदालसा रे, वली मन लीधो पाठो घेर रे ॥ ८ ॥ दा० ॥ फट रे पापी मन शुं कियुं रे, किण उपर तें आण्यो राग रे, प्राणसनेही इहां आवी रहे रे, एहवुं किहांथी ताहरुं जाग्य रे ॥ ए ॥ दा० ॥ मिछा डुक्कड दीधो मदालसा रे, हवे कुमरें पूठी निज नारि रे ॥ ए कोण वृद्धा इहां आवी हुती रे, कुमरी क हे सांजल जरतार रे ॥ १० ॥ दा० ॥ वयण बोलावी बेहेन मदालसा रे, परदेशिणी तेहनी ठे दासी रे ॥ कुमर चिंते ते तो माहारी प्रिया रे, जाग्यो राग थयो उल्लासी रे ॥ ११ ॥ दा० ॥ रोमांचित काया मन उ

लस्युं रे, नाम सुणी हरख्यो ततकाल रे ॥ पुण्य हुवे तो ते मुजने मले रे, ए जिनहर्ष शोलमी ढाल रे॥१२॥

॥ दोहा ॥

॥ वली मनमांहे चिंतवे, मैं फोगट धर्यो राग ॥ किहां ते नारी मदालसा, रूपकला सोभाग ॥ १ ॥ स मुद्दत्त लेइ गयो, पापी मुजने नाखि ॥ जिहां होये तिहां जइ मलुं, पण दैव न दीधी पांख ॥ २ ॥ ए सु ख लीलासाहेबी, ए नारी ए राज ॥ पण नही नारी मदालसा, तो ए सुख किण काज ॥ ३ ॥ इण्डामां हे मदालसा, मुख न जणावे वात ॥ माणे नारी त्रि लोचना, सुख विलसे दिन रात ॥ ४ ॥ सुख दुःख न कहे केहने, जे नर उत्तम होय ॥ संगतें भरम गमा यवो, वाट न लेवे कोय ॥ ५ ॥

॥ढाल सत्तरमी ॥ श्रेणिकमन अचरिज थयुं ॥ए देशी॥

॥ एण अवसर तिहां सांभलो, आगल जे उपगारो रे ॥ मध्यान्हें जिन पूजवा, जिनगृह गयो कुमारो रे ॥ १ ॥ एण० ॥ करे विचार त्रिलोचना, वार घणी थइ आजो रे ॥ प्रीतम हजीय न आवियो, किशें विलंब्या काजो रे ॥ २ ॥ एण० ॥ दासी मूकी देहरे, प्रीतम न रति लहाय रे ॥ सघले हो जोयुं फरी, पण साधो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नहिं किहांय रे॥३॥एण०॥करे विलाप त्रिलोचना,पियु पासें न सुहावे रे॥ जेम जल जेम माछली,तडफि तडफि दुःख पावे रे ॥४॥एण० ॥ राजा पण चिंता करे, सुद्धि किहां नवि थाये रे॥ दुःख सहु कोइ करी रह्या, चिंतामां दिन जाये रे ॥५॥एण०॥ तेण पुरमांहे धनी रहे, महेश्वरदत्त मनाय रे ॥ उप्पन कोडि कनकनी, निधि व्याजें व्यवसाय रे ॥ ६ ॥ एण० ॥ वाहण ज लवट पांचशें, शकट पांचशें वहेतां रे॥ गृह विपण प ण पांचशें, पांचशें वखार समहिता रे॥७॥एण०॥गोकु ल जेहने पांचशें,पांचशें गज मदमाता रे॥ घोडा जा स विलायती,पांचशें चंचल ताता रे॥८॥एण०॥पांचशें सुंदर पालखी, पांच लाख नृत्य जेहने रे ॥ सुभट पांचशें जलगे,पुत्री नहीं पण तेहने रे॥ ए ॥एण०॥ केटलेएक दिने दिकरी, एक थइ गुणवंती रे ॥ चो शठ नारिकला जणी, सुंदररूप सोहंती रे ॥ १० ॥ ॥ एण० ॥ सहस्रकला नामें भली,मनमां शेठ विचा रे रे ॥ ए संसार असारता, पापें करी जीव भारे रे ॥ ११ ॥ एण० ॥ कन्या सारिखो वर मले, तो तेह ने परणावुं रे ॥ घरनो भार देइ करी, संपद तास भ लावुं रे ॥ १२ ॥ एण० ॥ हुं दीक्षा लेउं जैननी, आ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तमने हितकारी रे ॥ आतम तारुं आपणो, मनमां बात विचारी रे ॥ १३ ॥ एण०॥ वरनी करे गवेषणा, पण न मले मन गमतो रे॥कहे जिनहर्ष पूरी थइ,सत्तरमी ढालें नमतो रे ॥१४॥एण०॥सर्वगाथा॥३४४॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछ्युं शेठ निमित्तियो, कोण कन्या वरदाख ॥ ज्ञान प्रयुंजी ते कहे, साची माने भाख ॥१॥ महारा जा वर एहने, मलशे एकण मास ॥ सामग्री विवाहनी, करो सगाई खास ॥२॥ महेश्वरदत्त खुशी थयो, करे महोत्सव भूरि ॥ लगन लीयो एक मासनो, वाजे मंगलतूर ॥ ३ ॥ स्वजन तेडावे दूरथी, मंगल अनुपम कीध ॥ मोहोटां तोरण बांधियां, नगरमांहे यश लीध ॥ ४ ॥ धवल मढ्हावे गोरडी, वरने देवा काज ॥ गज तुरंग वस्त्राभरण, करि राखे सहु साज ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ राजा जो मिले ॥ ए देशी ॥

॥ पुरमांहे थइ सघले वात, महेश्वरदत्त विवाह विख्यात ॥ पुएयें पामियें ॥ एतो मन मान्या सुखशात ॥ पु० ॥ सांभली राय सभायें राय, मनमांहे विस्मय वली थाय ॥ १ ॥ पु० ॥ पहेले मांड्यो छे विवाह, वरनी वात न दीसे कांहि ॥ पु० ॥ कोण मा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हाराजा इहां आवशे, पुत्री जेहने परणावशे ॥ २ ॥
॥पु०॥ राय विचारे एहवुं चित्त, धन्य धन्य एह महे
श्वरदत्त ॥ पु० ॥ एहवी लक्ष्मीनो जे धणी, वैराग्यें ते
हने अवगणी ॥ ३ ॥ पु० ॥ देइ जमाइने घर सार,
पोतें लेशे संजम भार ॥ पु० ॥ हुं पण त्रिलोचना
भरतार, शुद्ध करी थुं राजभंडार ॥ ४ ॥ पु० ॥ दीक्षा
लेइ आतमकाज , सारुं जेम पामुं शिवराज ॥ पु० ॥
महेश्वरदत्तशुं कियो विचार, आपण थाशुं दीक्षा धार
॥ ५ ॥ पु० ॥ पडहो नगर फेराव्यो राय, परदेशीसें
देशी थाय ॥ पु० ॥ त्रिलोचनावर निरति कहे, मदा
लसा विरतंत जे लहे ॥ ६ ॥ पु० ॥ तेहने राजा आपे
राज, सहस्त्रकला कन्या शिरताज ॥पु०॥ पडहो नगर
निरंतर फरे, एहवां वचन मुखें उच्चरे ॥ ७ ॥ पु० ॥
मास एक हुउ जेटले, पडह ठब्यो पोपट तेटले ॥
॥ पु० ॥ सूडो कहे वचन तेणि वार, भो भो राज
पुरुष अवधार ॥८॥ पु० ॥ लेजाउ मुज राज डुवार,
राय जमाइ कहुं विचार ॥ पु० ॥ मदालसा पतिनी
कहुं शुद्धि, पूर्व वृत्तांत कहुं मुज बुद्धि ॥ ए ॥ पु० ॥
तुमने वात कहुं हुं आज, कन्या सहस्त्रकला लहुं रा
ज ॥ पु० ॥ पंखीनुं पण जाग्युं भाग्य, नहीतो मुज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए किहांथी लाग ॥ १० ॥ पु० ॥ तेण पुरुषें कौतुक ने काज, राय कन्हें आएयो शुकराज ॥ पु० ॥ रायस न्ना पूराणी घणुं, लोक सहु आव्युं पुरतणुं ॥ ११ ॥ ॥ पु० ॥ मदालसा आणी इहां राय, त्रिलोचना परि यचमां गाय ॥ पु० ॥ हुं ज्ञानी सघले विख्यात, तीन कालनी जाणुं वात ॥ १२ ॥ पु० ॥ राजा तिमहिज कीधुं सहु, नगरलोक मलियां तिहां बहु ॥ पु० ॥ बेठो सिंहासन नूपाल, कहे जिनहर्ष अढारमी ढाल ॥ १३ ॥ पु० ॥ सर्व गाथा ॥ ३६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नूत नविष्यत कालनी, केम कहेशे ए वात ॥ ज्ञान किहांथी एहमां, पशु तणो ए जात ॥१॥ राजा कहेने आपशे, पंखीने केम राज ॥ राज्यपशु केम पा लशे, अचरिज थाशे आज ॥२॥ कोइक छे ए देवता, कीधुं छे ए रूप ॥ नहीं तो पोपट पंखियो, जाणे कि शुं स्वरूप ॥ ३ ॥ पहेली नारी मदालसा, तेहनो कहुं प्रबंध ॥ सावधान थइ सांनलो, सकल कहुं संबंध ॥४॥

॥ ढाल नगणीशमी ॥ वात म काढो हो व्रत तणी ॥ ए देशी ॥

॥ वारु नगर वाणारसी, मकरध्वज नूपालो रे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तास कुमर रलियामणो, उत्तम चरित्र दयालो रे ॥१॥ ॥वा०॥ रीसाउीने नीकल्यो, नमतो जरुअन्न आयो रे ॥ प्रवहण बेसी चालियो, धरतो हर्ष सवायो रे ॥ २ ॥ वा० ॥ गिरिजलकांत समुइ विचें, तिहां कूपकजल जरियो रे ॥ जलकारण मांहे गयो, बारी मां उतरियो रे ॥ ३ ॥ वा० ॥ देवनुवन देखी करी, पेठो मांही कुमारो रे ॥ लंकापति राक्षसतणी, पुत्री रति अवतारो रे ॥ ४ ॥ वा० ॥ निरुपम नाम मदालसा, परणी बाहेर आयो रे ॥ समुइदत्त वाहण चल्यो, जलविण सहु कुःख पायो रे ॥ ५ ॥ वा० ॥ पंच रत्न सुप्रसादथी, जल जोजन सुख आप्यां रे ॥ पर उपगारी एहवो, सहुनां संकट काप्यां रे ॥ ६ ॥ ॥ वा० ॥ स्त्री धन देखी चित्त चल्युं, कुलमर्यादा गंडी रे ॥ समुइदत्त व्यवहारियें, नाख्यो जलधि उपाडी रे ॥ ७ ॥ वा० ॥ तिमिंगल तट जइ रह्यो, मैनिक तास विदार्यो रे ॥ निकलीयो ते जीवतो, माछी चित्त विचार्यो रे ॥ ८ ॥ वा० ॥ ए कोइ उत्तम नर अछे, राख्यो तेहने पासें रे ॥ एक दिन पुर जोवा जणी, आव्या मली उल्लासें रे ॥ए॥वा०॥ पुत्री राय त्रिलोचना, साप डशी जीवाडी रे ॥ परणी तिहां सुख

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जोगवे, प्रीति परस्पर जाडी रे ॥ १० ॥ वा० ॥ एक दिवस जिन पूजवा, कुमर गयो मध्यान्हें रे ॥ जिन पूजा विधिशुं करी, एक चित्तें एक ध्यानें रे ॥ ११ ॥ ॥ वा० ॥ पुष्पमध्य दीठी तिहां, मदनमुद्रित मुख नलिका रे ॥ उघाडो तंबोलीए, सर्प डशी अंगुलिका रे ॥ १२ ॥ वा० ॥ थइ अचेत पड्यो तिहां, उत्तम कुमर ततकालो रे ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थइ, उगणीशमी ए ढालो रे ॥ १३॥वा०॥ सर्वगाथा ॥३७ए॥

॥ दोहा ॥

॥तुजने नारी मदालसा, तणी कथा कही एह ॥तुज कुमरी त्ररतारनी, सुधि कही में तेह ॥१॥ सत्य प्रतिज्ञा ताहरी, दे मुजने हवे राज ॥ सहस्त्रकला कन्या सहित, माहरे एहशुं काज ॥२॥ हुं तिर्यंच सुख जोगवुं, राज्य तणुं निशदीस ॥ सहस्त्रकला परणावजो, तुजने द्युं आशीष ॥ ३ ॥ राय कहे पंखी जणी, केम देवराए राज ॥ कीर कहे उत्तम जणी, वचन तणी बे लाज ॥४॥ देइश तो लेइश खरो, नहींतो जइश मुज ठाण ॥वृत्ति करीश फल फूलनी, थाउं तुज कल्याण ॥ ५ ॥ मायावी माणस हूये, कीर कहे सुण राय ॥ काम करी पोतातणुं, मुकर जाये क्षण मांय ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

न घटे मुज रहेवुं इहां, तुं तो काढे इंद ॥ काम सख्यां दुःख वीसख्यां, वैरी हूआ वैद ॥ ७ ॥ एम कही सू डो नठियो, नृप राख्यो कर साहि ॥ धीरोथा तुज आ पीशुं, आर्ति म धर मनमांहि ॥ ८ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ तुंतो मारावालम रे गुज रातीरा ॥ ए देशी ॥

॥ तुंतो माहारा वाहला रे पंखी सूवटा, तुने विन ति करुं कर जोडी रे ॥ जीवे छे कुमर के नहीं, कां हि गांठ हैयानी छोडी रे ॥ १ ॥ तुं० ॥ वलतुं शुक भांखे रे राजवी, मुजमांहे नहीं कांइ कूड रे ॥ तुज आगल प्रथम कथा कही, तो न्याय पडी मुख धूड रे ॥ २ ॥ तुं० ॥ एटली जो कथा कह्यांथकां, मुजने तें नाप्युं राज रे ॥ तो आगल कहे शुं थाशे सही, शुं थाशे माहारां काज रे ॥ ३ ॥ तुं० ॥ कुमरी कहे ताम मदालसा, तुज पाये पडुं बुं कीर रे ॥ मुज उपर महेर धरी करी, कर नीवेडो खोर नीर रे ॥४॥ तुं० ॥ राजन कुमरी तुमें सांभलो, कहुं सापें डइयो कुमार रे ॥ धरणी पडियो नहीं चेतना, विष व्याप्युं अंग अपार रे ॥ ५ ॥ तुं० ॥ नामें अनंगसेना गणिका भ णी, जाणे अनंगसेना साक्षात रे ॥ सहु नरनां रे मा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

न मोड्यां जिणें, तेहनी शी कहियें वात रे ॥ ६ ॥ तुं० ॥ रूपें तोरें जींती अपछरा, रति जींती नारी अंग रे ॥ नागकुमरी रे जींती पातालनी, कोइ मांडी न शके जंग रे ॥ ७ ॥ तुं० ॥ ते गणिका आवी किण कारणें, तेणें दीठो पड्यो कुमार रे ॥ उपाडीने निज घर ले गइ, एतो डशियो छे विषधार रे ॥ ८ ॥ तुं० ॥ विषअपहारी मणि आणीने, जलमांहे पखाली तेह रे ॥ ते जलशुं रे सींचे कुमरने, निर्विष थयो ततक्षण देह रे ॥ ए ॥ तुं० ॥ हुंतो तूठ्यो रे गणिका तुज उपणी, माग माग रूचे तुज जेह रे ॥ माग्यो द्यो जो मुज साहिबा, सुख विलासो धरीय सनेह रे ॥ १० ॥ ॥ तुं० ॥ तेणे वेश्या रे मंदिर राखियो, चोथी भूइ जिहां चित्रशाल रे ॥ ते साथें रे सुख संभोगना, भोगवे दिन रात रसाल रे ॥ ११ ॥ तुं० ॥ तेणे गणिका रे तेहने गुण कीयो, गुण मान्यो दीधो मान रे ॥ तुजने संभलावी सहु कथा, मुज नापे तुं राजदान रे ॥ १२ ॥ तुं० ॥ तुजथी तो रे तेह कुमर भलो, वेश्याशुं मांड्यो घरवास रे ॥ निजवच निष्फल कीधुं नहीं, धन्य धन्य तेहने साबाश रे ॥ १३ ॥ तुं० ॥ निज वाचा रे जे पाले नहीं, ते माणस नही पण ढोर रे ॥ जिनहर्ष अइ ढा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ल वीशमी, शुक बोल्यो एणिपेरं जर रे ॥१४॥तुं०॥ सर्वगाथा ॥ ४०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्ति हूंत महाराज तुज, में पाम्युं सहु राज॥ निरपराध मुज जाण दे, नहीं राज्यशुं काज ॥ १ ॥ लाभ थयो इहां एटलो, गलशोषण जे काय ॥ पोंक न खाधो कर बळ्या, घरना चूक्या घाय ॥ २ ॥ वैद्य भणी कल्याण हुंत, दाक्षिण्य मूकी जेय ॥ पहिलां धन लेइ पछें, गोली औषध देय ॥३॥ दाक्षिण्य मेल्ही नवि शक्यो, हुं मूरख शिरताज ॥ सर्व कथा कहीने पछें, मागण लाग्यो राज ॥ ४ ॥ सांभल शुक राजा कहे, पूरण रोग न जाय ॥ वैद्य कह्युं धन नवि ल हे, तुं केम राज लहाय ॥ ५ ॥ तें अरधी कही वार ता, पूरो न कह्यो भेद ॥ मूढ उतावल कां करे, था शे सफल उमेद ॥ ६ ॥ अनंगसेना गृह जाइने, कु मर निहाली आज ॥ कथा सुणी सहु आगली, तुजने देइश राज ॥ ७ ॥ चलु जेवारें आवियुं, जमणनी भांगी आश ॥ तेम तुम वचन प्रतीत छे, बेसो क्षण आवास ॥ ८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल एकवीशमी ॥ वैरागी थयो ॥ ए देशी ॥

॥ राये चाकर मोकल्या रे, जोवा गणिकारे गेह ॥ अइ जोजो घर तेहनुं रे, कुमर न दीठो तेहो रे ॥ ॥ १ ॥ ए शुं शुक कह्युं, वेश्या घर केम जायो रे ॥ उत्तम नरथकी, एतो काम न थायो रे ॥ २ ॥ ए० ॥ ताहरा घरमां सांभल्यो रे, उत्तम चरित्र कुमार ॥ तें राख्यो डे कहे किहां रे, साचुं बोल गमार रे ॥ ३ ॥ ॥ ए० ॥ शुं जाणुं रे भाइयो रे, कुमर तणी हुं सार ॥ राय जमाइ माहरे रे, शे आवे आगारो रे ॥४॥ए०॥ घर खोली जोवो तुमें रे, शो भ्रम राखो रे आम ॥ हाथ तणा कांकण भणी रे, आरीसो शुं काम रे ॥ ॥ ५ ॥ए०॥ जोइ पाछा आविया रे, नृपने कह्युं वृत्तांत ॥ कुमर नहीं गणिका घरें रे, राजा थयो सचिंत रे ॥ ६ ॥ ए० ॥ गहन वीत नवि जाणियें रे, डे को इ देव चरित्र ॥ राय कहे शुकरायने रे, किशुं पजावे मित्तरे ॥ ७ ॥ ए० ॥ तुज विण निरत न का पडे रे, कहे किहां मुज जामात ॥ किस्युं गुमानी थइ रह्यो रे, कहेने साची वातो रे ॥ ८ ॥ ए० ॥ सूडो कहे राजन सुणो रे, धूरत जाएयो रे तुझ ॥ बालक जेम भोलावियो रे, तेम भोलाव्यो मुझ रे ॥ ए ॥ ए० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्तम ते उत्तम हुवे रे, मध्यम कदिय न हूंत ॥ अगर दहे तन आपणुं रे, परिमल जग पसरंत रे ॥ १० ॥ ॥ ए० ॥ तुं उरमिया सारिखो रे, हुंतो सुखड सार ॥ घासंतां घासे नहीं रे, धिक् तेहनो अवतारो रे ॥११॥ ॥ ए० ॥ तुजथी फल पाम्युं नही रे, फोकट कियो रे प्रयास ॥ सांभल हवे तुं सहु कहुं रे, सहुने थाये उल्लास रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ अनंगसेना मन चिंतव्युं रे, अनुपम रूप सौभाग्य ॥ राय जमाइ पण सही रे, मलियो माहरे भाग्य रे ॥ १३ ॥ ए० ॥ जनम लगें ए माहरे रे, थाये जो भरतार ॥ मानवभव सुकृता रथो रे, भोगवुं भोग अपारो रे ॥ १४ ॥ ए० ॥ मुज घरथी जाये नही रे, करियें तेह उपाय ॥ दोरो मंत्री सूत्रनो रे, बांध्यो तेहने पाय रे ॥ १५ ॥ ए० ॥ तेह नो कीधो सूवटो रे, नारी चरित्र विशाल ॥ एम जिनहर्ष राख्यो घरें रे, एकवीशमी ए ढालो रे ॥ १६ ॥ ॥ ए० ॥ सर्वगाथा ॥ ४३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पोपट घाढ्यो पांजरे, रात्रें दोरो छोड ॥ पुरुष करी सुख भोगवे, सफल करे मन कोड ॥ १ ॥ दिवसें वली पोपट करे, निशि दिन एम करंत ॥ सूडो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मनमां चिंतवे, ए शुं थयुं वृत्तंत ॥ २ ॥ मनुष्य थ
की तिर्यंच थयो, में श्यां कीधां पाप ॥ आ नव तो
नवि सांजरे, शे पाम्या संताप ॥ ३ ॥ हा हा जाएयुं
में हवे, पिता अदीधी नार ॥ परणी कुमरी मदाल
सा, पांच रतन ग्रह्यां सार ॥ ४ ॥ ए बे पाप कियां
इहां, तेथी डश्यो जुयंग ॥ वली आव्यो वेश्या घरे,
नरथी थयो विहंग ॥ ५ ॥ एतो पाप तणा कुसुम,
फल आगमशुं प्रमाण ॥ तो नरकें पडवुं सही, एम
निंदे अप्पाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ साधुजी जलें पधा
स्या आज ॥ ए देशी ॥

॥ अनंगसेनाना रागथी जी, रह्यो तिहां एक मा
स ॥ मेल्ही उघाडुं पांजरुं जी, गइ किण काज विमा
स ॥ १ ॥ नरेशर सांजल एह विचार ॥ अचरिजनो
अधिकार, सुणतां हर्ष अपार ॥ न० ॥ पडहतणी
उद्घोषणा जी, सांजली नगर मोझार ॥ तिहांथी उ
डी आवियो जी, पडह छब्यो तेणि वार ॥ २ ॥ न० ॥
ते राजन हुं सूवटो जी, में सहु कह्यो विचार ॥ रा
जा एहवुं सांजली जी, हर्षित थयो अपार ॥ ३ ॥
॥ न० ॥ पगथी दोरो छोडियो जी, कुमर थयो तत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

काल ॥ सहुने अचरिज उपन्युं जी, थयो प्रमोद वि शाल ॥ ४ ॥न०॥ हरखी कुमरी मदालसा जी, नय णें नाह निहाल ॥ पाम्यो हर्ष त्रिलोचना जी, विर हाग्नि दुःख टाल ॥ ५ ॥ न० ॥ परणावी बहु प्रेम शुं जी, शेठ महेश्वरदत्त, सहस्रकला निज कन्यका जी॥ खरची बहुलुं वित्त ॥६॥न०॥ तीन नारी पुण्यें मली जी, सुरकन्या अवतार ॥ अनंगसेना चोथी थइ जी, रूपतणो भंडार ॥७॥न०॥ राजा तेडी आरामिकी जी, तेहने दीधी मार ॥ फूलमांहि नलिका धर्यो जी, पू ज्यो सर्पविचार ॥८॥न०॥ मालिनी कहे राजन सुणो जी, तुम आगल कहुं साच ॥ समुद्दत्त व्यवहारियो जी, खोटो जेहवो काच ॥९॥ न० ॥ तेणें पापी मुज ने कह्युं जी, देइश तुज दीनार ॥ परखीने तुज पांच शें जी, कुमर भणी तुं मार ॥ १० ॥ न० ॥ लोभे मुज लक्षण गयां जी, में कीधुं ए काज ॥ पापी मति हुवे नारिने जी, केहनी नाणे लाज ॥ ११ ॥ न० ॥ राजा रोषातुर थयो जी, मारो पापी तेह ॥ मालणी पण मारो जइजी, हुकुम दियो नृप एह ॥१२॥न०॥ते लेइ मारण निसर्याजी, केहनी नाणे लाज ॥ करे रा यने विनति जी, मकरध्वजनो पूत ॥१३॥न०॥ होणा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हार निश्चें हुवे जी, एहोनो शो दोष ॥ कहे जिनहर्ष बावीशमी जी, ढालें नृप मनरोष ॥१४॥ न०॥

॥ दोहा ॥

॥ मूकुं नहीं ए जीवता, एहनी करवी घात ॥ जाएयो नहीं एणें एटलो, रायतणो जामात ॥ १ ॥ एक घर डाकण परिहरे, न करे तास विनाश ॥ मुज घरथी ए नवि टल्यां, बेनो करवो नाश ॥ २ ॥ विनय करी नृपने कहे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ महाराय नवितव्यता, करवो एह विचार ॥ ३ ॥ वांक न कांइ शेठनो, मालिणी नहीं कांइ वांक ॥ टले नही जे विधि लख्या, सुख डुःखना शिर आंक ॥ ४ ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र नर, मोहोटा जेह मुणिंद ॥ कियां कर्म सहु जोगवे, बूटे नही नरिंद ॥ ५ ॥ किणशुं कीजें आमणो, किणशुं कीजें रोष ॥ केहनो दोष न काढियें, कर्मतणो ए दोष ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ मोरियाना गीतनी देशी ॥

॥ राये राणा रमे रंकुआ ॥ ए देशी ॥

॥ पाय पडी नृप तणे रे कुमार, विनति करीय समजाविया जी ॥ एहनुं कीधुं पामशे एह, शेठ मालण बे मेल्हावियां जी ॥ १ ॥ शेठनुं सहु धन

लीध, मालणी काढ्या निज देशथी जी ॥ पहेलां पण नृप मनमां वैराग्य, राज्य ग्राहक सुत पण नथी जी ॥ २ ॥ देइ जमाइने राज्यभंडार, राय चारित्र शुभ आदरयो जी ॥ महेश्वरदत्त पण रुद्धि समृद्धि, सहु देइ शुद्ध संजम धरयो जी ॥ ३ ॥ महेश्वरदत्त नृप कियो विहार, संजम पाले निज निर्मलो जी ॥ शास्त्र सिद्धांत भणया गुरु पास, जेहनो यश थयो उज्जलो जी ॥ ॥ ४ ॥ समुद्रपर्यंत थयुं नृप राज्य, चुल्ल हिमवंत लगें आगन्या जी ॥ उत्तमचरित्र थयो महाराज, जेहने चार घरणी धन्या जी ॥ ५ ॥ भ्रमरकेतुनी सांभलो वात, षष्ठिलक्ष राक्षसनो धणी जी ॥ तेणे नैमित्तिक पूछिया ताम, किहां मुज अरि नाखुं भखणो जी ॥ ६ ॥ ते कहे सांभल राक्षस नाथ, पुत्री तुज परणी मदालसा जी ॥ पंच रतन तुज सार भंडार, तेह लइ गयो शुभ दिशा जी ॥ ७ ॥ मोहोटपल्ली नामें वेलाकुल, सकलतट तणो स्वामी थयो जी ॥ राय विद्याधर सहु नम्या पाय, पुण्यथी राज्य मोहोटो लह्यो जी ॥ ८ ॥ सांभली राक्षस एह विचार, चिंतवे चित्तमां एहवुं जी ॥ देखो अलंघ्यभवितव्यता एह, विधि लख्युं ते थयुं तेहवुं जी ॥ ९ ॥ समुद्रमां शैल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स्थितकूप डुवार, देवता पण जइ नवि शकेजी ॥ ग हन पाताल भूवनें तिहां जइ, परणी मुज कुमरी भू चरथके जी ॥ १० ॥ पंचरत्न मुज जीवित प्राय, ले गयो हवे किश्युं किजियें जी ॥ ज्ञान नैमित्तकतणुं प्रमाण, भाग्य भूचर सलहीजीये जी ॥ ११ ॥ एक लो शून्य द्वीपें हतो एह, तिहां पण मने जींत्यो एणे जी ॥ कहे जिनहर्ष पुएयें फली आशा, ढाल त्रेवीशमी ए कहीजी ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥ ४६३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे तो ए राजा थयो, पंचरतन सुप्रभाव ॥ हय गय पायक भट कटक, माहरो न लागे दाव ॥ १ ॥ हवे ऊतो हुं केम शकुं, केहनो राखुं शोष ॥ जे कि रतारें वडा किया, तेहशुं केहो रोष ॥ २ ॥ प्राणें जा स न पोहोंचियें, तेशुं किश्यो संग्राम ॥ तेहने नमियें जाइने, तो विणसे नहीं काम ॥ ३ ॥ काज विचारी जे करे, तेहनुं सीझे काम ॥ अविचारयुं धांधल पडे, घटे महत्वने माम ॥ ४ ॥ हवे जमाइ ए थयो, क लहतणुं नहीं ठाम ॥ हसतां रोतां प्राहुणो, राखुं किश्यो विराम ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल चोवीशमी ॥ मोरा साहिब हो श्री शीतलनाथ के ॥ ए देशी ॥

॥ एहवुं चिंतवी हो ते मूकी संग्राम के, राक्षसपति आव्यो तिहां ॥ करी प्रणिपत हो नृपने तजी मान के, स्नेह सहित मलिया इहां ॥१॥ पुएयाइ हो अधिकी संसार के, उत्तमचरित्र तुमारडी ॥ मुज पुत्री हो अपछर अवतार के, विधियें तुज कारण घडी ॥ २ ॥ जोरावर हो सुर असुर नरिंद के, नावि आगल को नहीं ॥ फोकटनो हो वहीयें मन गर्व के, महारो नर्म नाग्यो सही ॥ ३ ॥ तुं माहारी हो पुत्रीनो कंत के, थयो जमाइ माहरो ॥ तुज साथें हो माहरे हवे प्रीत के, रूडो वांछुं ताहरो ॥ ४ ॥ मन केरी हो नागी सहु नीति के, ससरो जमाइ बेहु मल्या ॥ मुज पुत्री हो सरिखो वर एह के, मुइ माग्या पासा ढल्या ॥ ५ ॥ पुत्रीने हो जइ मलियो बाप के, बाप संघातें पुत्री मली ॥ हियडाशुं हो नीडी हेत आणी के, पुत्रीनी पूगी रली ॥६॥ शिर धारी हो आणा लंकेश के, उत्तमचरित्र नरेशनी ॥ लंकानुं हो देइने राज्य के, देइ नलामण देशनी ॥ ७ ॥ मोकलीयो हो राक्षसपति राय के, सहुने आणंद उपनुं ॥ एक दिवसें हो बेगा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दरबार के, दूत आव्यो तिहां नृपनो ॥ ८ ॥ आसीने हो रायने दियो लेख के, राय उघाडी वांचीयो ॥ मांहे लखिया हो बे बोल अमोल के, जेहथी टाढो हुवे हियो ॥ए॥ स्वस्तिश्री हो प्रणमी जगदीश के, वाणारसीथी मन रसे ॥ मकरध्वज हो लिखितं माहाराय के, उत्तमचरित्र कुमर दिसें ॥ १० ॥ आलिंगे हो हरखें सस्नेह के, कुशल खेम वरतुं इहां ॥ तुमकेरा हो वांछुं सुखखेम के, कागल दीयो छो जिहां ॥ ११ ॥ जिण दिनथी हो तुं चाल्यो परदेश के, खबर करावी में घणी ॥ दोडाव्या हो केडें अस्वार के, निरत न पामी तुंम तणी ॥१२॥ चाल्या केडे हो पुरपाटण गाम के, पर्वत द्वीप भमंतडां ॥ किहां न सुणी हो वत्स ताहरी वात के, निशि दिन वाट जोवंतडां ॥ १३ ॥ निःस्नेही हो तुं तो थयो पुत्त के, मात पिताने अवगणी ॥ मेल्ही ने हो गयो तुं निरधार के, हियडे अग्नि दीधो घणी ॥ ॥ १४ ॥ छोरुनें हो मन नांहिं दुःख के, मात पिता दुःख करी मरे ॥ पूरी थइ हो चोवीशमी ढाल के, कही जिनहर्ष भली परें ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥४८३॥

॥ दोहा ॥

॥ तथा अहं वार्द्धक थयो, तुज विजोग न खमाय

॥ तुज विरहें व्याकुल थयो, दिवस दोहिलो जाय ॥ ॥ १ ॥ तुजने अमे न दूहव्यो, कुवचन न कह्युं कोइ ॥ रीसावी नीकली गयो, ते पछतावो होय ॥ २ ॥ राज धुरंधर तुं कुमर, तुज उपर सहु मांड ॥ निस धारां मूकी गयो, उलो गयो तुं गांडि ॥ ३ ॥ लोक मुखें मैं सांभळ्यो, मोटपछी वेलाकुल ॥ उत्तमचरित्र राजा थयो, भाग्य थयुं अनुकूल ॥ ४ ॥ गाढा रही यायत थया, उल्लसीयां अम प्राण ॥ पण लेख दर्शणें आवजे, जेम थाये कल्याण ॥ ५ ॥ हुं घरडो बूढो थयो, मुजथी न चाले राज ॥ राज देइने तुज ऋणी, हुं सारुं निज काज ॥ ६ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ कलालणी तें माहारो राजन मोहियो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरजी लेख वांची मन रंगशुं हो लाल, ढील म करजे पुत्त ॥कु०॥ पाणी अपीत पधारजो हो लाल, आव्यां रदेशे सूत ॥ कु० ॥ १ ॥ वेहेलो अहिंयां आवजे हो लाल ॥ कु० ॥ तुज विण शूनो देशडो हो लाल, तुज विण शूनुं राज्य ॥कु०॥ तुज विण शूनो दंगडो हो लाल, आव्यां रदेशे लाज ॥ कु० ॥ २ ॥ व०॥ कु० ॥ राज धुरंधर तुं सही हो लाल, तुज विण केवुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राज ॥कु०॥ तुं कुलदीपक सेहरो हो लाल, तुं सहुनो शिरताज ॥कु०॥३॥व०॥कु०॥ जो चाहे सुख मो न णी हो लाल, वांछे मुज कल्याण ॥ कु० ॥ तो वहेलो आवे इहां हो लाल, टाढां होय मुज प्राण ॥ कु० ॥४ ॥ व० ॥ कु० ॥ भाग्यवंत तुं दीकरो हो लाल, विनय वंत गुणवंत ॥ कु० ॥ मावित्रांने मूकीने हो लाल, बेठो जइय निचिंत ॥ कु० ॥५॥ व० ॥ कु० ॥ राज्य लह्युं अमें सांभल्युं हो लाल, मोटपल्ली वेलाकुल ॥ ॥ कु० ॥ मनमां रलियायत अइ हो लाल, भाग्य थयुं अनुकूल ॥ कु० ॥ ६ ॥ व० ॥ कु० ॥ तुजनें शुं ल खियें घणुं हो लाल, तुं सहु वातें जाण ॥ कु० ॥ थोडामां समजे घणुं हो लाल, आव्या तणां वखाण ॥ कु० ॥ ७ ॥ व० ॥ कु० ॥ हैयुं भराणुं हरखशुं हो लाल, वांची सहु समाचार ॥ कु० ॥ ततक्षण बूटी लोयणें हो लाल, आंसू केरी धार ॥ कु० ॥ ८ ॥ व० ॥ कु० ॥ बाप भणी दुःख में दियो हो लाल, हुं थयो पुत्त कपुत्त ॥ कु० ॥ खाये हियडुं फोलीने हो लाल, माय तणो जिम लूत्त ॥ कु० ॥ ए ॥ व० ॥ कु० ॥ मंत्रीसर परधानने हो लाल, राय भलावी राज ॥ ॥ कु० ॥ नारी चार निज सैन्यशुं हो लाल, चाल्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सहु लेइ साज ॥ कु० ॥ १० ॥ व० ॥ कु० ॥ वाणार सी नयरी तणी हो लाल, लशकर साथें अखूट ॥ ॥ कु० ॥ अखंड प्रयाणें वाटमां हो लाल, चलि आ व्यो चित्रकूट ॥ कु० ॥ ११ ॥ व० ॥ कु० ॥ महासेन राजा सांजळ्यो हो लाल, उत्तमचरित्र नरिंद ॥ कु०॥ आव्यो बे सामो जइयें हो लाल, मलियें मन आनंद ॥ कु० ॥ १२ ॥ व० ॥ कु० ॥ कटक सुजट शुं जइ मळ्यो हो लाल, आव्या नगर मऊार ॥ कु० ॥ ढाल थइ पच्चवीशमी हो लाल, कहे जिनहर्ष विचार ॥ कु० ॥ १३ ॥ व० ॥ कु० ॥ सर्वगाथा ॥ ५०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ माहासेन हेतशुं मळ्यो, कर जोडी कहे एम ॥ मित्र जलें पाउ धारिया, वर्त्ते बे सुख खेम ॥ १ ॥ तुम सुपसायें कुशल बे, आव्यो मलवा काज॥ कृपा करि मुज उपरें, माहाराजा ळ्यो राज ॥ २ ॥ मेह तणी परें ताहरी, निशदिन जोतो वाट ॥ मुज पुण्यें तुं आवियो, आज थया गहगाट ॥ ३ ॥ उत्तमचरित्र नरिंदने, राजा देइ राज, ॥ पोते संयम आदस्यो, सा ध्यां आतमकाज ॥ ४ ॥ केटलाएक दिन तिहां र ह्यो, मलवाने मेदपाट ॥ आण मनावी आपणी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चाट जोट करणाट ॥ ५ ॥ कामदार पोता तणा, मे
ल्ही चढ्यो जूराल ॥ आव्यो गोपाचलगिरें, केवी के
रो काल ॥ ६ ॥ वीरसेन राजा थयो, कटकतणी सु
णी वात ॥ चार अक्षोयणी सैन्यशुं, परवरियो सुप्र
ज्ञात ॥ ७ ॥ सीमा आवी उतस्यो, मूक्यो सन्मुख
दूत ॥ दूत कह्युं मत आवजे, जो थाये रजपूत ॥८॥
जो कांकल करवा मतें, राखे जो रजवट्ट ॥ तो वेहलो
थइ आवजे, थाशे बहु खलखट्ट ॥ ए ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ मुज लाज वधारो रे,
तो राज पधारो रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणि वयण विचित्रो रे, ए तो थयो शत्रो रे, हवे
उत्तमचरित्रो, युद्ध कारण चढ्यो रे ॥ बे लशकर मली
यां रे, मांहो मांहे अडियां रे, सहु सुजट आफलि
या, कांकल कपढ्यो रे ॥ १ ॥ रण घोर मंडाणुं रे,
जाय न छंडाणुं रे, उखाणो खोजा पाडा, जैसा आ
थडे रे ॥ शर चिहुं दिशि छूटे रे, बगतर कस तूटे रे,
वच्चें नाल वछूटे, धरती धडहडे रे ॥ २ ॥ हथनाल
हवाइ रे, आवाज मचाइ रे, वच्चें आवी बरछीना घा
व, लागे घणा रे॥ सूरा एक झूझे रे, गयघड आलूझे
रे, रवि सूझे नही, अंधारुं बिहामणुं रे ॥३॥ घणा रो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थे मारे रे, तीखी तरवारें रे, जे हारे ते आयो नही, र जपूतणी रे ॥ हाको हाक वाजे रे, गयवीर जेम गाजे रे, रखे लाजे सात, परियागत आपणी रे ॥ ४ ॥ खग्ग खंडे विहंडे रे, पग एक न छंडे रे, वली आवी मंडे रे, साहामा अरि हैये रे ॥ देखीने कोपे रे, नखा ओ धा टोपें रे, नवि लोपे रणवट, पग पाछा नवि दीये रे ॥ ५ ॥ जूझे एम शूरा रे, हथियारें पूरा रे, बलवंत सनूरा, घाव साहामा लीये रे ॥ राणीना जाया रे, ह णवाने धाया रे, तेम आया रे राया, जयहाथा दीये रे ॥ ६ ॥ निशाणें घाय रे, वाजें शरणाय रे, सिंधूडे मचाइ रे, वेढ विहामणी रे ॥ तरवारें त्राछे रे, नाजंता पाछे रे, तेम शूरा छे ते जूझे, साम्हे अणी रे ॥ ७ ॥ उलट्या वरसाला रे, वहे लोही खाला रे, मछराला मतवाला, हठ मेल्हे नही रे ॥ घायें घूमंता रे, केइ धड जूझंता रे, रुंड मुंड हसंता, जयकारी सही रे ॥ ॥ ८ ॥ माटीनुं घाय रे, हथियारसबाह रे, भुज सामो आय रे, जो बलवंत छे रे ॥ स्वामी वपुकारे रे, तुं वै री संहारे रे, शूरोशिरदार रे, तुं सम कोण अछे रे ॥ ॥ ९ ॥ लखगाने लडाया रे, लखगाने लडिया रे, रड वडीयां रे, तुंड घणां सुभटो तणां रे ॥ कांकस देखता

रे, जोगिणी बल देवा रे, तेम करण बल लेवा रे, नूत फरे घणां रे ॥ १० ॥ एम महायुद्ध मातो रे, वारे नहीं थातो रे, संसरातो रे, पाछो कोइन नसरे रे ॥ पुण्याइ जोरें रे, ते अधिके तोरें रे, निज पराक्रम फोरे रे, चिंते तेम करे रे ॥ ११ ॥ नृप नत्तमचरित्रो रे, बहु पुण्यविचित्रो रे, निजशत्रु रे बांध्यो, ऊाली जीवतो रे ॥ वीरसेन लजाणो रे, मुजथी सपडाणो रे, मुज लीधो घाणो रे, जे सबलो हतो रे ॥ १२ ॥ निज आण मनायो रे, छोड्यो ते रायो रे, वैराग्य आयो रे, मन वीरसेनने रे ॥ छवीशमी ढालें रे, जिनहर्ष निहाले रे, सहु टाले रे, द्वेषने निज मनें रे ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ५२४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मान मलिन थयुं माहरुं, जो रह्यो राजमऊा र ॥ सुखकारण जे जाणियें, ते सहु दुःख दातार ॥ १ ॥ संपदमां आपद वसे, सुखमांहे दुःख वास ॥ रोग वसे निज नोगमां, देह मरण आवास ॥ २ ॥ ए संसारी जीवने, बंधन छे धन दार ॥ मूरख माने सुख करी, मधुलेपी खड्गधार ॥ ३ ॥ मान रहे नहीं केहनुं, एणे संसार मऊार ॥ जीती कोण जाइ शके, एम नृ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प करे विचार ॥ ४ ॥ पहेले हुं चेत्यो नहीं, धर्म न खे
ल्यो दाव॥ तो आवी उत्तमचरित्र, नेजे दीधो घाव ॥५॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ चतुर सनेही
मोहनां ॥ ए देशी ॥

॥ ए कारण वैराग्यनो, रायतणे मन आयो रे ॥
राज्यऋद्धि गेमी करी, करे धर्मउपायो रे ॥१॥ ए० ॥
पुण्यवंत नर एह गे, ए नर अनमी नामें रे ॥ तो मा
हारी प्रनुता हवे, एहिज नूपति पामे रे ॥२॥ ए० ॥
वीरसेन नृप एहवो, मनमां करिय विचारो रे ॥ उत्तम
चरित्र नणी कहे, ए ल्यो राज नंडारो रे ॥३॥ए० ॥
हुं दीक्षा लेइश हवे, गेडी राज्यनंडारो रे॥ एह लख्युं
तुज नाग्यमां, संग्रह तुं हितकारो रे ॥४॥ए०॥ उत्तम
चरित्र नरिंदने, देइ राज्य विख्यातो रे ॥ वीरसेन सं
यम लियो, सहस्रपुरुष संघातो रे ॥ ५ ॥ ए० ॥ केट
लाएक दिन तिहां रही, देश मनावी आणो रे ॥
पुण्यतणे सुपसाउले, पग पग लहे निरवाणोरे ॥६ ॥
ए०॥ चतुर राय तिहांथी चल्यो, पोताने पुर आयो रे
॥ बापें बहु महोत्सव करी, पुरप्रवेश करायो रे ॥७॥
ए० ॥ कुमर पिता पायें नम्यो, पुत्रपिता हेतें मलिया
रे॥ जननी उरशुं नीडियो, आज मनोरथ फलियारे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥८॥ए०॥ चार वहू पाये पडी, सासु दे आशीषो रे ॥ अविचल जोडी तुम तणी, फलज्यो आश जगीशो रे ॥ ए ॥ ए० ॥ मात पिता हर्षित थयां, हरख्यों सहु परिवारो रे॥ राय करे अनुमोदना, ऐ ऐ पुण्य अपारो रे ॥ १० ॥ ए० ॥ पुत्र गयो थयो एकलो, ए ऋद्धि संपद पामी रे ॥ नव निधि जिहां जावे तिहां, शा पुरुषा अनुगामी रे ॥ ११ ॥ ए० ॥ उत्तम चरित्र कुमारनें, शुभ मूहूरत शुभ दीसें रे ॥ मकरध्वज नृ पस्वहथें, दीधुं राज्य जगीशें रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ राज्य करो सुत ए तुमें, अमें हवे संयम लीजें रे ॥ चोथो आश्रम आवियो, आतम साधन कीजें रे ॥ १३ ॥ ए० ॥ लेइ सहुनी आज्ञा, व्रत लीधुं नृपालो रे ॥ कहे जिनहर्ष उल्लासशुं, सत्तावीशमी ढालो रे ॥१४॥ ए० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चारे राज्य स्वामी थयो, उत्तमचरित्र नरिंद ॥ पूरव पुण्य पसाउलें, दिन दिन अधिक आणंद ॥ १ ॥ चारे अपछर सारिखी, चारे चतुर सुजाण ॥ चारे नारी पतिव्रता, चारे माने आण ॥ २ ॥ चालीश लक्ष अश्व जेहनें, चालीश लक्ष गजदोड ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चालीश लक्ष रथ रूयडा, पायक चारे कोड ॥ ३ ॥
चालीश कोडि ग्रामाधिपति, ऋद्धितणो नहीं पार ॥
चार राज्य सुख भोगवे, दिन दिन अधिक विस्तार ॥
॥ ४ ॥ जिन प्रासाद करावियां, कीधी तीरथ जात्र ॥
अकरा कर सहु मेलिया, पोष्या उत्तम पात्र ॥ ५ ॥
बिंब भराव्यां जिनतणां, पुस्तक भरावां भंडार ॥
साहमीवछल पण कीयां, पर उपगार अपार ॥ ६ ॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥ चूनडीनी ॥ अथवा ॥
प्राणी वाणी जिनतणी ॥ ए देशी ॥

॥ एम धर्म करंतां अन्यदा, आव्या तिहां केवल धार रे ॥ वांदण काजें नृप चालियो, उलट धरि चित्त अपार रे ॥ १ ॥ ए० ॥ पांचे अभिगम नृप साचवी, वांदी बेग मुनि पास रे ॥ मुनिवर दे मीठी देशना, सांभलतां अंग उल्लास रे ॥ २ ॥ ए० ॥ संसारी जीव सुणो तुमो, जिन धर्म करो तुमे भायो रे ॥ संसार सायरमां बूडतां, तरवानो एह उपायो रे ॥ ॥ ३ ॥ ए० ॥ संसार अनंत भमंतडां, मानभव लाधो एह रे ॥ दश दृष्टांतें करि दोहिलो, चिंतामणि सरिखो जेह रे ॥ ४ ॥ ए० ॥ वली श्रुत सांभलवुं दोहिलुं, सुणतां उतरे मनकाट रे ॥ सांभलतां श्रुत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हियडा तणा, उघडे अज्ञान कपाट रे ॥ ५ ॥ ए० ॥ सद्दहणा पण दोहिली, जीवने आवतां जाण रे ॥ जेम जल न रहे काचे घडे, तेम श्री जिनवरनी वाण रे ॥ ६ ॥ ए० ॥ वीर्य फोरववुं दोहिलुं, संजमने विषय सुजाण रे ॥ ए चार अंग छे दोहिलां, पामीने करो प्रमाण रे ॥ ७ ॥ ए० ॥ एतो धर्मवेलाएं जीवने, आलस आवे बहु भ्रांति रे ॥ आरंभ वेलायें जागतो, निशदिन करवानी खांति रे ॥ ८॥ ए० ॥ जे जीव इणे बोले मृषा, ले अदत्त अब्रह्मशुं चित्त रे ॥ परिग्रह मेले बहु भ्रांतिनो, दुर्गतिशुं तेहने प्रीत रे ॥ ॥ ए ॥ ए० ॥ दूर करी तेरे काठिया, क्रोधादिक चार कषाय रे ॥ ऊंपी पांचेंइना भोगने, जिनधर्म सोहेलो थाय रे ॥१०॥ए०॥ कोण मात पिता केहनी सुता, केहना सुत केहनी नार रे ॥ दुर्गति जातां इण जीवने, कोई नही राखणहार रे ॥११॥ए०॥सहु कोइ स्वारथनुं संगुं, स्वारथ पाले सहु नेह रे ॥ जबही स्वारथ पहोंचे नही, तो तुरत दिखावे छेह रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ मूरख कहे माहरो माहरो, ए धन ए घर परिवार रे॥ परभव जाये जीव एकलो, पण कोय न जाये लार रे ॥ १३ ॥ ए० ॥ तो खोटी ममता मूकीने, करो धर्म

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थइ नजमाल रे ॥ जिनहर्ष दीधी मुनिदेशना, अढा वीशमी ए ढाल रे ॥१४॥ए०॥सर्वगाथा॥५६१॥

॥ दोहा ॥

॥ दीधी एणि परें देशना, सांभली सहुको लोक ॥ परम प्रमोद थयो हवे, रवि दर्शन जेम कोक ॥ १ ॥ राजा पूछे मुनि प्रतें, विनय करी कर जोड ॥ भगवन् केणे कर्मे करी, पामी संपद कोड ॥ २ ॥ सायर मांहे केम पड्यो, मैनकघर रह्यो केम ॥ शुक थइ म णिका घर रह्यो, कहो मुजने थयो जेम ॥ ३ ॥ केवल ज्ञानी मुनि कहे, सांभल राय सुजाण ॥ कीधां कर्म न छूटियें, भोगवियें निरवाण ॥ ४ ॥ जे जेहवां कीजें कर्म, तेथी फल प्रापत्त ॥ पूरवभव सुएय ताहरो, ल हि संपत्त विपत्त ॥ ५ ॥

॥ ढाल छगणत्रीशमी ॥ पास जिणंद जुहारियें ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजा केवली कहे, हिमवंत भूमि सुविशा लो रे ॥ सुदत्तग्रामा नामें भलो, धनधान्य समृद्धि रसालो रे ॥ १ ॥ सु० ॥ धनदत्त कौडुंबिक वसे, ते चार वधू भरतारो रे ॥ पहिलां द्रव्य हतुं घणुं, कालें गयो धनविस्तारो रे ॥ २ ॥ सु० ॥ दारिद्रनो पासो थ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

यो, तिहां आव्या चार मुनीशो रे ॥ चोरें लूट्यां क
छपडां, टाढें धूजे निशि दीसो रे ॥३॥ सु० ॥ धनदत्त
नडक नावियो, अनुकंपा मनमां आणी रे ॥ वस्त्र
प्रावरण पोता तणां, वहोराव्यां उत्तम प्राणी रे ॥४॥
॥ सु० ॥ चारे स्त्री अनुमोदना, कीधी प्रिय धन अव
तारो रे ॥ धनदत्त तेणें पुण्यें करी, तुं राय थयो शिर
दारो रे ॥ ५ ॥ सु० ॥ चार राज्य पाम्या इहां, ते
चारे वस्त्र प्रजावें रे ॥ पांच रत्न बहु धन लह्यां, व
लि नारी चार सुहावे रे ॥ ६ ॥ सु० ॥ तेणे कर्में
तुं मीननें, पेटें वसियो कोइ कालो रे ॥ मैनिक घर
पण तुं रह्यो, ए कर्म तणी सहु चालो रे ॥ ७ ॥सु०॥
कोइएक नव तें मुनि नणी, मेहेलो देखी सूगाणो
रे॥ गंधाए मत्स्य सारिखो, ते कर्म तिहां बंधाणो रे ॥
॥ ८ ॥ सु० ॥ सहस्रतमे पहिले नवें, तें पोपट पंजर
घाल्यो रे ॥ ते पापें पोपट थयो, तुज कर्में ए फ
ल आल्यो रे ॥ ए ॥ सु० ॥ अनंगसेना पूरव नवें,
निज सहियर कृत शणगारो रे ॥ आवो वेश्या बहेन
डी, हांसी कीधी तेणिवारो रे ॥ १० ॥ सु० ॥ तेणें
कर्में वेश्या थइ, राजादिक सुणी वृत्तांतो रे ॥ ऐ ऐ
कर्मविटंबना, पाम्यो वैराग्य महंतो रे ॥ ११ ॥ सुण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कारण केवली कहे ॥ ए आंकणी ॥ राज्य दीधुं निज पुत्रनें, चारे नारि संघातें रे ॥ ऋद्धि राज्यादिक गे डिने, संयम लीधो मन खांतें रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ चारित्र पाली उजलुं, तप करि कर्म खपायो रे ॥ अंतकाल अणसण करी, सुरलोक तणां सुख पायो रे ॥ १३ ॥ सु० ॥ महाविदेहें सीझशे, नृप उत्तमचरित्र कुमारो रे ॥ वस्त्रदानथी सुख लह्यां, यो दान सुणी अधिकारो रे ॥ १४ ॥ सु० ॥ भूत वेद सायर शशी १७४५, आशो शुदी पंचमी दिवसें रे ॥ उत्तमचरित्र कुमारनो, में रास रच्यो सुजगीशें रे ॥ १५ ॥ सु० ॥ श्री जिनवर सुप्रसादथी, श्रीपाटण नयर मझारो रे ॥ गाथा सत्याशी पांचशें, उगणत्रीशमी ढाल उदारो रे ॥ १६ ॥ सु० ॥ श्री खरतर गछ गुण निलो, श्री जिनचंद सूरिंदो रे ॥ वाचक शांतिहर्ष गणि, जिन हर्ष सदा आणंदो रे ॥ १७ ॥ सु० ॥ स० ॥ ५८५ ॥

॥ इति वस्त्रदानोपरि श्री उत्तमचरित्र कुमार रास संपूर्णः ॥

ग्रंथा ग्रंथ ॥ ८०१ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org